2 कुरिन्थियों

लेखकः

प्रभु यीशु मसीह का प्रेरित पौलुस

समयः

लगभग 57 ए.डी.

विषयः

पहले पत्र में लिखी गयी समस्याओं के अलावा एक और समस्या खड़ी हो गयी थी। कुछ झूठे शिक्षक वहाँ आ गए थे जो कह रहे थेः पौलुस यीशु मसीह का सच्चा प्रेरित नहीं है। उसकी शिक्षाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। इन शिक्षकों ने बहुतों को प्रभावित भी कर लिया था, जिसकी वजह से पूरा चर्च खतरे में था। पौलुस की प्रेरिताई को रद्द करने की वजह से मात्र सच्चे सुसमाचार के (जिसे यीशु ने पौलुस को दिया था) बारे में भी सवाल उठना स्वाभाविक था। इसलिए वहाँ के विश्वासियों के लिए और मसीह की सच्चाई के लिए यह आवश्यक हो गया था कि पौलुस यीशु द्वारा अपनी प्रेरिताई की नियुक्ति के बचाव के बारे में कहे। यह भी कि वह दिखाए कि उसका संदेश और काम उसके प्रेरित के पद के ऊपर आधारित थे। इसीलिए किसी और पत्र की तुलना में वह इस में मसीह के लिए अपने व्यक्तिगत जीवन और सेवा के बारे में सब से अधिक कहता है। वह अपने अनुभव, नियत, मेहनत और दुखों के बारे में कहते हुए बहुत भावुक हो जाता है। ऐसा करते हुए वह बताता है कि 'मसीह के लिए' सच्ची सेवा क्या है और इस में क्या निहित है। वह यह भी सिखाता है कि जो मसीह का सेवक होने का दावा करते हैं उन्हें और उनके चरित्र को कैसा होना चाहिए।

1 पौलुस की तरफ़ से जो परमेश्वर की
इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है और
हमारे भाई तीमुथियुस की तरफ़ से परमेश्वर
के उस चर्च के नाम जो कुरिन्थुस में है
और सारे अखाया के सब पवित्र लोगों
के नाम 2हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और
शान्ति मिलती रहे।

3हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर
और पिता का धन्यवाद हो जो तरस
(दया) के पिता और सब तरह की शान्ति
के परमेश्वर हैं। 4परमेश्वर हमारी सभी
परेशानियों में हमें तसल्ली देते हैं, ताकि हम
उन्हें भी तसल्ली दे सकें जो किसी तरह की
परेशानी में से गुजर रहे हैं। 5क्योंकि जैसे
हम मसीह के दुखों (यीशु मसीह की वजह
से परेशानियाँ) के साथ अधिक गुज़रते
हैं वैसे ही हम शान्ति (तसल्ली, सुकून) में
मसीह के द्वारा ज़्यादा सहभागी होते हैं।
6यदि हम क्लेश (सताव) से गुजरते हैं तो

1:1 "परमेश्वर की इच्छा से"- वह यहाँ और पूरे पत्र में अपनी प्रेरिताई की सत्यता पर ज़ोर डाल रहा है। ऐसा इसलिए, क्योंकि कुरिन्थ के कुछ लोग उसकी इस बुलाहट पर आक्रमण कर रहे थे।

"प्रेरित"- रोमि. 1:1; 1 कुरि. 1:1; मत्ती 10:2.

"तीमुथियुस"- पद 19; प्रे.काम 16:1-3; 1 तीमु. 1:2.

"अखाया"- वह क्षेत्र (अखाया) जहाँ कुरिन्थ था।

1:2 रोमि. 1:7

1:3-11 यहाँ इस पत्र में दो महत्वपूर्ण विषय हैं - "शान्ति" और "क्लेश" यूनानी भाषा के जिस शब्द का अनुवाद किया गया है (संज्ञा या क्रिया), वह 17 बार आया है। "क्लेश, दुःख या परेशानी" जिन यूनानी शब्दों से बने हैं, उतनी ही बार उनका उपयोग किया गया है। पौलुस अपनी समस्याओं के बारे में शिकायत नहीं कर रहा है - लेकिन सच्चाई इसके विपरीत है (6:10; 7:4; 12:10; रोमि. 5:3)। उसने यह भी पाया कि उसकी समस्याएँ और दुःख उसके लिए भलाई उत्पन्न कर रही हैं। हम उसकी कही हुयी बातों पर ध्यान दें।

कष्टों और क्लेशों के कारण वह परमेश्वर के बारे में गहरा ज्ञान प्राप्त कर सका और लोगों को शान्ति देने के योग्य बना (पद 3,4)।

उसने मसीह में ऐसी शान्ति का अनुभव किया, जिससे कि उसके दुःखों से कुछ लाभ हुआ (पद 5)।

इसी कारण वश वह दूसरों को शान्ति भी दे सका (पद 4,6)।

वह परमेश्वर पर भरोसा रखना सीख सका। वह यह भी सीख सका कि विश्वासियों के (पद 9) जीवन अनन्तकाल के लिए और अधिक महिमा को उत्पन्न करने वाले हैं (पद 4:17)।

उसने यह भी सीखा कि उसकी तकलीफ़ें जितनी अधिक बढ़ती गयीं, उसमें परमेश्वर की ताकत भी बढ़ती गयी (12:9-10)। अय्यूब 3:20 पर टिप्पणी देखें। अपनी समस्याओं और तकलीफ़ों के कारण पौलुस ने परमेश्वर के स्वभाव के सम्बन्ध में गहराई से सीखा था।

"शान्ति" - (यूनानी में दोनों ही अर्थ हैं)- अपने वचन और उपस्थिति से परमेश्वर निरन्तर शान्ति दिया करते हैं - भजन 23:4; 119:50; यशा. 40:1; 61:2; 66:13; रोमि. 15:4-5; 2 थिस्स. 2:16-17; इब्रा. 6:18. परमेश्वर के आत्मा का एक नाम, "शान्ति देने वाला", उसी यूनानी शब्द से निकला है। यूहन्ना 14:16 के 'नोट्स' देखें।

1:4 "हमारी सभी परेशानियों में"- परमेश्वर सारी शान्ति के स्त्रोत हैं (पद 3) हर समस्या में शान्ति देते हैं। यदि विश्वासी नहीं चाहेंगे तो परमेश्वर कुछ नहीं कर सकते। मत्ती 2:18 देखें। यह ध्यान दें कि परमेश्वर पौलुस को साहस देते हैं ताकि वह दूसरों की हिम्मत बढ़ा सके (पद 6)।

1:5 "मसीह के दुखों"- रोमि. 8:17; फ़िलि. 1:29; 3:10; कुल. 1:24 यीशु मसीह ने दूसरों के लिए दुःख उठाया। वह अभी भी अपने लोगों में होकर दुःख उठाते हैं (प्रे.काम 9:4-5)। जो लोग जान बूझकर दूसरों के लिए दुःख उठाते हैं वे ही उनके द्वारा मिलने वाली शान्ति को समझ सकते हैं यूहन्ना 16:33.

1:6 पौलुस का जीवन दूसरों के लिए था। उसकी मुसीबतें और प्रोत्साहन उन्हीं के लिए थे। (1 कुरि. 9:19-23; 10:24,33; 2 तीमु. 2:10)। जो लोग उनकी राह पर चलते हैं, उन्हीं को परमेश्वर से शान्ति प्राप्त करने का अधिकार है। क्लेश उठाने का परिणाम "धीरज" है - रोमि. 5:3-5; याकूब 1:2-4; 5:11.

यह तुम्हारी तसल्ली और उद्धार के लिए है। यदि हमें तसल्ली मिलती है, तो यह तुम्हारी तसल्ली के लिए है। उसी के प्रभाव से तुम धीरज के साथ उस सताव को सह लेते हो, जिन्हें हम भी सहते हैं। 7तुम्हारे बारे में हमें पूरा भरोसा है, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम जिस तरह हमारे सताव (दुख, तकलीफ़, परेशानियों) में हिस्सेदार हो, ठीक उसी तरह हमारी तसल्ली में भी हो।

8हे भाइयो, बहनो हम यह नहीं चाहते हैं कि तुम उस सताव के बारे में अनजान रहो, जो हम ने एशिया में सहा था। हमारे ऊपर ऐसा दबाव आ पड़ा था, जिसको सहना बहुत मुश्किल था। हमें तो ऐसा लगा था कि हम ज़िन्दा ही नहीं बचेंगे। 9हमें ऐसा लगता था कि हम पर मौत की आज्ञा हो चुकी थी, ताकि हम अपने ऊपर भरोसा न रखें, लेकिन केवल परमेश्वर पर जो मरे हुओं को ज़िन्दा करते हैं, 10उन्हीं ने हमें मौत की बड़ी मुसीबत से बचाया और बचाते रहते हैं। हमारा भरोसा उन्हीं पर है कि आने वाले समयों में भी वही हमको बचाते रहेंगे। 11तुम भी मिलकर बिनती के द्वारा हमारी मदद करो कि जो अनुग्रह (वरदान) हमें तुम्हारे बिनती करने से मिला उसके कारण बहुत लोग हमारी ओर से परमेश्वर को धन्यवाद दे सकें।

12हम अपने विवेक की इस गवाही के

1:7 "सताव"- उन्हें भी यातना सहनी पड़ रही थी, किन्तु उतनी नहीं, जितनी पौलुस सह रहा था। मसीह और उनके लोगों के साथ दुःखों में भाग लेना मसीह में शान्ति और आनन्द में भी भाग लेना है।

1:8 "एशिया"- प्रे.काम 16:6; 18:19. इफ़िसुस एशिया का प्रमुख शहर था।

"दबाव"- पद 10; 4:8-9; 6:9; 11:23-29 से तुलना करें। जिन संकटों और कठिनाईयों का वह सामना कर रहा था, वे सब उसके सहने की सीमा से अधिक थे।

1:9 "मौत" - ऐसा लगता है कि वह समझ गया था कि उसकी मृत्यु का समय आ गया है। किन्तु यह भी उसके लाभ की बात थी (रोमि. 8:28)। पहले से अधिक वह परमेश्वर पर निर्भर था। उसे इस बात का एहसास था, कि यदि परमेश्वर लोगों को मौत से जिला सकते हैं, तो बड़े संकट में से भी निकाल सकते हैं।

1:10 अवश्य यह एक चमत्कारिक और अविश्वसनीय मुक्ति रही होगी। इसके द्वारा पौलुस को भविष्य के सम्बन्ध में बहुत बड़ा आश्वासन मिला। 2 तीमु. 4:18 से तुलना करें। 1 शमू. 17:34-37 भी देखें।

1:11 कुरिन्थ में घटिया किस्म के जीवन के लिए पौलुस ने वहाँ के विश्वासियों को डाँटा। - 1 कुरि. 3:1-4; 5:1-2; 6:1; आदि। वह उनकी प्रार्थनाओं की कीमत जानता था, कि उन से उसे सहायता मिलेगी (फ़िलि. 1:19; और फिले. 22 से तुलना करें)। इसके द्वारा हम यह सीखें कि कमज़ोर और प्रायः गिरते रहने वाले विश्वासी बिना परमेश्वर की ताकत के नहीं है। यह भी देखें कि पौलुस यह चाहता था कि परमेश्वर के लिए धन्यवाद में बढ़ावा हो (4:15; 9:11-13)।

"अनुग्रह"- निर्ग. 34:6; भजन 86:15; 103:13; 111:4; 145:8; विलाप. 3:22; मीका 7:19; मत्ती 9:36.

1:12-14 कुरिन्थ में कुछ लोग पौलुस की विश्वास योग्यता और सच्चाई के विषय में प्रश्न उठा रहे थे (13:3)। इसलिए वह ये शब्द लिखता है। उनके लिए यह महत्व की बात थी कि उस पर भरोसा रखें, वह भी इसलिए नहीं कि उसका लाभ हो, किन्तु स्वयं उनका। उसका गर्व करना, उसके स्वयं के लिए सुरक्षा नहीं थी, किन्तु उसके द्वारा प्रचार किए गए सुसमाचार और उसकी प्रेरिताई के पद के लिए। इस पूरे पत्र में वह अपना ध्यान 11:13 के झूठे शिक्षकों की ओर लगाता है। वे एक झूठे संदेश को ले आए थे और उसके बचाव के लिए, उन्हें पौलुस पर हमला करना था। सच्ची खुशी की खबर के बचाव के लिए, पौलुस को अपने बचाव की दलील पेश करनी थी। जहाँ तक कुरिन्थ के निवासियों की बात थी, खुशी की खबर की सफ़लता पौलुस पर निर्भर थी। जो कुछ भी उसने उन्हें लिखा, वह सब उनके लाभ के लिए था (12:19)। उस समय तक नयी वाचा से सम्बन्धित पुस्तक बनी नहीं थी, न कोई सुसमाचार लिखा गया था।

कारण खुश होते हैं कि दुनिया में और खासकर तुम्हारे बीच हमारा चालचलन परमेश्वर के लायक पवित्र और सच्चाई के साथ था। वह दुनियावी ज्ञान (इल्म) से नहीं लेकिन परमेश्वर की मदद से था।
13हम तुम्हें और कुछ नहीं लिखते हैं, सिर्फ़ वही जो तुम पढ़ते या समझते हो और हमें आशा है, कि आखिर तक समझते रहोगे।
14जैसा तुम में से कितनों ने समझ लिया है, कि जैसे हम तुम्हारी खुशी का कारण हैं, वैसे ही तुम भी प्रभु यीशु के दिन हमारे लिए खुशी का कारण ठहरोगे।
15मैं यह चाहता हूँ कि पहले तुम से भेंट करूँ ताकि तुम्हें एक और दान मिले।
16यह भी कि मैं तुम्हारे पास से होते हुए मकिदुनिया को जाऊँ और फिर तुम्हारे पास वापस लौट आऊँ और तुम मुझे यहूदिया की यात्रा के लिए रवाना कर दो।
17इसलिए मैंने जो यह जल्दबाज़ी की है, तो क्या मैं दुविधा में था? या जो करना चाहता हूँ वह दुनियावी सोच-विचार के हिसाब से था, कि एक ही समय में हाँ, हाँ और नहीं, नहीं भी करूँ?
18जिस तरह परमेश्वर भरोसेमंद हैं, उसी तरह तुम्हारे लिए हमारी बातों में हाँ और नहीं एक साथ नहीं पाए जाते हैं।
19क्योंकि

1:12 "खुश"- इस चिट्ठी में यह भी एक खास विषय है। इकतीस बार वह इस शब्द का संज्ञा या क्रिया के रूप में उपयोग करता है।

उदा. के लिए देखें 10:8,13; 11:16. इसी शब्द का अनुवाद रोमि. 5:2-3 और फ़िलि. 3:3 में "आनन्दित रहो" किया गया है।

पौलुस जो घमण्ड यहाँ करता है, वह परमेश्वर में पवित्र आनन्द है। यह वह घमण्ड नहीं है जिसे पापी अविश्वासी करते हैं। वे अपने बल, बुद्धि और योग्यता पर घमण्ड करते हैं। पौलुस ने परमेश्वर पर घमण्ड किया और इस बात पर कि परमेश्वर ने किस प्रकार उसमें कार्य किया। उसे यह मालूम था कि जो कई अच्छी बात उसमें है वह सृष्टिकर्ता की ओर से है और परमेश्वर की दया के कारण हैं तुलना करें रोमि. 7:18; 1 कुरि. 1:29,31.

1:14 "दिन"- वह दिन जब मसीह लौटेंगे। वह यह जानता था कि उस समय उसमें वे आनन्द का एक कारण ठहरेंगे। फ़िलि. 4:1; 1 थिस्स. 2:19-20.

1:15-24 ये पद इस सत्य का कारण बताते हैं कि कुरिन्थ के कुछ लोग उसकी विश्वास योग्यता और ईमानदारी पर सन्देह क्यों कर रहे थे। पौलुस यहाँ उनके सन्देह के सम्बन्ध में उत्तर देता है। पौलुस ने फिर से कुरिन्थ जाने की योजना बनायी थी। उसने उन्हें यह बताया था। कुछ कारणों से वह नहीं जा सका। उसके विरोधी उसकी इस बदली योजना को इस बात का आधार बना रहे थे, कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। वह खुशी की खबर के बारे में भी अपने मत को बदल सकता है। पौलुस अपने सम्मान से अधिक सुसमाचार के सम्मान के बारे में चिन्तित था। यह दोनों बातें आपस में जुड़ी हुयी हैं। इसलिए मसीह के सुसमाचार के लिए वह अपने सम्मान के विषय में साफ़-साफ़ बतलाता था। इस बात में वह मसीह के सभी सेवकों के लिए एक नमूना था। हम सभी को यह जानना चाहिए कि हमारी प्रतिष्ठा और सुसमाचार की प्रतिष्ठा एक दूसरे से जुड़ी हुयी है।

1:15-17 यह उसकी आरम्भिक योजना थी, जिसे उसे बदलना पड़ा था (1 कुरि. 16:5-7 से तुलना करें)। उन्हें ऐसा लगा कि वह अपनी योजनाओं को किसी ठोस कारण से नहीं बदलता था। उनके विचारों से वह दुनिया के लोगों के समान कर रहा था। वे यह कल्पना कर रहे थे कि वह चंचल मन का है और बिना सोचे समझे कुछ भी कहता है।

1:18-20 पौलुस को यह अचम्भा हुआ, कि उसके विषय में जैसा पद 17 में है, वे यह सब सन्देह कर रहे थे। इसलिए वह गंभीरता से उन्हें आश्वासन देता है कि ऐसा नहीं है। उसका संदेश और शिक्षा सदा से "हाँ वाला" रहा है। इन सभी महत्वपूर्ण विषयों पर वह अपने विचारों को बदलने वाला नहीं था। वह उन्हें यह भी कह सकता था कि जिस मसीह का प्रचार वह करता था, उनके बारे में किसी प्रकार का बदलाव नहीं है। प्रत्येक वायदा जिसे परमेश्वर करते हैं, वह मसीह में पूरा करेंगे। पद 19 का सिलवानुस सीलास ही है।

परमेश्वर के बेटे यीशु मसीह जिन का संदेश सिलवानुस, तिमुथियुस और मैंने तुम्हें दिया, उसमें कभी हाँ और कभी ना दोनों नहीं थे, लेकिन उसमें हाँ ही हाँ था। 20परमेश्वर के जितने भी वायदे हैं, वे सभी उन्हीं में हाँ के साथ हैं। इसलिए उनके द्वारा वे पूरे भी किए जाएँगे ताकि हमारे द्वारा परमेश्वर को आदर सम्मान मिले। 21जो हमें तुम्हारे साथ मसीह में मजबूत करते हैं और जिन्होंने हमारा अभिषेक किया है, वह परमेश्वर हैं। 22उन्हों ने हम पर मुहर भी लगा दी है और पवित्र आत्मा को बयाने में हमारे मनों में दिया है।

23परमेश्वर को गवाह ठहराकर मैं कहता हूँ कि अब तक मैं कुरिन्थुस में इसलिए नहीं आया ताकि तुम कठोर डाँट फटकार से बच जाओ 24यह नहीं कि हम तुम्हारे विश्वास के बारे में तुम पर हक जताना चाहते हैं। लेकिन हम तुम्हारी खुशी के लिए तुम्हारे साथ काम करते हैं, क्योंकि तुम विश्वास ही से बने रहते हो।

2 मैं यह इरादा कर चुका था कि आने पर तुम लोगों को उदास न करूँ। 2क्योंकि यदि मैं तुम्हें उदास करूँ तो मेरे मन को खुश करने वाला कौन होगा, केवल वही जिसे मैंने उदास किया। 3मैंने यही बात तुम्हें इसलिए लिखी कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे आने पर जिन से खुशी मिलनी चाहिए, मैं उन से दुख पाऊँ। मुझे तुम सभी पर इस बात का भरोसा है कि जो मेरी खुशी है वह तुम सब की है। 4मैंने बड़े दुख से मन की पीड़ा से बहुत आँसू बहा-बहाकर तुम्हें लिखा था, इसलिए नहीं कि तुम्हें दुख हो,

---

1:21 परमेश्वर के सुसमाचार और परमेश्वर के सत्य के सम्बन्ध में सभी विश्वासियों को डावांडोल नहीं होना चाहिए (1 कुरि. 15:58; 16:13)। परमेश्वर ही उनको ऐसा बना सकते हैं (रोमि. 16:25; 1 पतर. 5:10).

"अभिषेक"- पौलुस यह नहीं कहता है, कि मुझे अभिषेक किया किन्तु 'हमें' किया। परमेश्वर सभी विश्वासियों का अभिषेक करते हैं - 1 यूहन्ना 2:20,27. वह अपनी आत्मा से उन्हें अभिषेक देते हैं और सारी मानव जाति से अलग कर के पुरोहितों का समाज बनाते हैं (प्रका. 1:6; मत्ती 1:1 के नोट्स देखें। लूका 4:18; प्रे.काम 10:38 से तुलना करें)।

1:22 "मुहर"- इफ़ि. 1:13; 4:30; 2 थिस्स. 2:13 से तुलना करें। विश्वासियों में परमेश्वर के आत्मा और उनकी उपस्थिति की वह छाप है, जो उन्हें "परमेश्वर के विशेष लोग" कर के अलग करती है (1 कुरि. 6:19-20; रोमि. 8:9; यूहन्ना 17: 6,10)।

"बयाने"- देखें। 5:5; इफ़ि. 1:14 और उन पर नोट्स देखें। परमेश्वर के द्वारा विश्वासियों को पवित्रात्मा दिया जाना इस बात की गारण्टी है कि जिस मीरास की उन्हों ने प्रतिज्ञा की है, वह भी उन्हें दी जाएगी (रोमि. 8:17,23; इफ़ि. 1:13-14; 1 पतर. 1:4)। उनके अन्तिम उद्धार के लिए अन्तिम चरण परमेश्वर द्वारा दी गयी यह प्रतिज्ञा है। क्योंकि परमेश्वर की आत्मा हम में है, इसलिए, हम कभी भी नाश नहीं होंगे। यूहन्ना 6:37-40; 10:27-29; 17:11-12; रोमि. 5:9-10; 8:28-39 भी देखें।

1:23 यह देखें कि वह कितनी गंभीरता से बोलता है। सुसमाचार की इज़्ज़त उसकी सब से बड़ी चिन्ता थी। अब वह अपने मन बदलने का कारण बतलाता है। ऐसा नहीं कि उसे अपने कहे वचन के बारे में ध्यान नहीं था। वह अपनी कही हुयी बात के बारे में गंभीर था। 2:1-4 भी देखें। उसका कहने का अर्थ यह था कि कुरिन्थ की कलीसिया की हालत यह थी कि उसके आने से उसे और उन्हें दुख और पीड़ा होने वाली थी। वह यह नहीं चाहता था। देखें 1 कुरि. 4:21.

1:24 वह नहीं चाहता था कि लोग उसे गलत समझें। वह तानाशाह नहीं था, जो उन्हें ज़बरदस्ती कुछ करने के लिए कहे। यह उनका अपना विश्वास था, जिससे वे स्थिर थे। यह उनके ऊपर प्रभाव रखने वाला उसका अधिकार नहीं था। (13:10) 1 पतर. 5:3 से तुलना करें।

2:1-4 1:23 देखें - कुछ ज्ञानी समझते हैं कि पौलुस 3,4 पद में जिस पत्र की ओर संकेत कर रहा है वह कुरिन्थियों का पहला पत्र है। किन्तु ऐसा लगता है कि यह कोई और पत्र था। वह शायद खो गया था और परमेश्वर के आत्मा ने उसे बाईबल का एक भाग नहीं बनने दिया।

लेकिन इसलिए कि तुम मेरे उस प्रेम को जानो, जो तुम्हारे लिए है।

5यदि तुम में से किसी ने निराश किया है तो केवल मुझे ही नहीं, लेकिन थोड़ा बहुत तुम सभी को निराश किया है। 6ऐसे व्यक्ति के लिए वह सज़ा बहुत है जो बहुमत से ठहरायी गयी। 7अच्छा यह है कि उसका अपराध माफ़ किया जाए और उसे तसल्ली भी दी जाए ताकि ऐसा इन्सान बहुत ज़्यादा निराशा से न भर जाए। 8इसलिए मेरी तुम से यह बिनती है कि उसे अपने प्रेम का सबूत दो। 9क्योंकि मैंने तुम्हें इसलिए भी लिखा था कि तुम्हें जाँच लूँ कि तुम मेरी सभी बातों को मानने के लिए तैयार हो या नहीं। 10जिस किसी का तुम कुछ माफ़ करते हो, उसे मैं भी माफ़ करता हूँ। क्योंकि मैंने भी जो माफ़ किया है, तो वह तुम्हारी वजह से मसीह की जगह में होकर किया है। 11ताकि शैतान हमें धोखा न दे सके क्योंकि उसकी चतुराई से हम अनजान नहीं।

2:5-10 यदि 3,4 पद में जिस पत्र की ओर संकेत हैं कुरिन्थियों का पहला पत्र था, तो जिस व्यक्ति के बारे में वह इन पदों में कह रहा है, वह 1 कुरि. 5:1-5 वाला व्यक्ति ही है। किन्तु यह मुमकिन है कि पौलुस किसी और व्यक्ति के विषय ही कह रहा है - जिसने व्यक्तिगत रीति से पौलुस के विरोध में बुरा किया था। उपयोग की गयी भाषा यहाँ इस ओर इशारा करती है। किन्तु उन दोनों के द्वारा एक बात ही सीखने को मिलती है। एक व्यक्ति जो चर्च के खिलाफ़ में गुनाह करता है, जब कलीसिया द्वारा अनुशासित किया जाता है, उसे माफ़ किया जाना चाहिए। उसे वापस संगति में अपनाया जाना चाहिए।

2:6 'सज़ा' का यहाँ अर्थ अनुशासन से है - झुण्ड से बाहर निकाला जाना या उसके साथ सहभागिता समाप्त करना या इस से मिलती जुलती बात (1 कुरि. 5:13; 2 थिस्स. 3:17 से तुलना करें)

2:7-8 चर्च अनुशासन का उद्देश्य मात्र दण्ड देना नहीं है, किन्तु गुनाह में पड़े व्यक्ति को पश्चात्ताप् के स्थान पर लाना है। ये पद दिखाते हैं कि उस व्यक्ति ने अपने जीवन में बदलाव लाना स्वीकार किया था और दुष्टता के कारण शोकित था। पौलुस कहता है, कि विश्वासियों को यह देखना चाहिए और जानना चाहिए कि अनुशासन कब समाप्त करें और क्षमा करना एवं शान्ति देना कब आरम्भ करें। वह यह नहीं कहता है कि अनुशासन और पश्चात्ताप् से पहले उन्हें क्षमा किया जाना चाहिए या शान्ति देनी चाहिए। जब मसीही पाप में गिरते हैं, कलीसिया के अगुवों को न बहुत नर्मी का व्यवहार करना चाहिए न अधिक कठोरता का। अनुशासन के साथ प्रेम भी होना चाहिए।

2:9 "मानने के लिए तैयार"- इसका अर्थ उसके प्रति आज्ञाकारिता से नहीं है (1:24)। किन्तु उसके द्वारा दिए गए प्रभु के निर्देशों के प्रति। इन दोनों के बीच एक बड़ा अन्तर है। कुछ मसीही अगुवे अपने प्रति आज्ञाकारिता पर ज़ोर डालते हैं। पौलुस चाहता था, कि प्रभु यीशु के प्रति लोग आज्ञाकारी हों।

2:10 व्यक्तिगत रीति से उस ने अपराध करने वाले व्यक्ति को क्षमा कर दिया था। उस व्यक्ति ने अपराध मान लिया था और इसलिए पौलुस उसके अपराध को छोटी बात समझ रहा था। इसलिए यदि वह 1 कुरि. 5:1-5 में वर्णित व्यक्ति के अपराध की बात कर रहा था तो यह असम्भव है। वह छोटी बात नहीं थी और पौलुस ने इस प्रकार से समझा भी न होता। किन्तु व्यक्तिगत रीति से उसके विरोध में किए गए किसी भी अपराध को वह माफ़ करने के लिए तैयार था। इस प्रकार की माफ़ी के विषय में देखें मत्ती 6:12,14,15; 18:21-35; इफ़ि. 4:32; कुल. 3:13. पौलुस को यह मालूम था कि मसीह की आँखें उसकी ओर हैं। यह भी कि दूसरों को क्षमा करने से कहीं अधिक परमेश्वर ने उसे क्षमा किया था।

2:11 शैतान का यह उद्देश्य है कि वह विश्वासियों के जीवन को बर्बाद कर डाले, कलीसियाओं को उजाड़े और मसीह का अपमान हो। यह सब कुछ करने के लिए उसके पास योजनाएँ थीं। वह मसीह के लोगों को पाप करने के लिए उकसाता है। इस प्रकार से करता है कि वे क्षमा प्राप्त करने की लालसा में तड़पते रहें। वह कोशिश करता है कि उनके पश्चाताप् किए बिना, कलीसिया उन्हें स्वीकार कर ले। किसी एक या अधिक सदस्यों के द्वारा वह चर्च की शान्ति और व्यवस्था को भंग करने का प्रयास करता है। वह यह कोशिश करता है कि कलीसियाई अगुवे गुनाह को हल्का फुल्का समझें या गुनाह करने वालों के साथ कठोरता से व्यवहार करें। शैतान पर नोट्स देखें जो 1 इति. 21:1; मत्ती 4:1 और यूहन्ना 8:44 में हैं।

12,13हालांकि प्रभु ने मेरे लिए एक नया दरवाज़ा खोला है कि मैं दोबारा आ सका लेकिन मेरा मन बेचैन था, क्योंकि मेरे भाई तीतुस से मेरी मुलाकात नहीं हो पायी। इसलिए मैंने विदाई ली और मकिदुनिया की ओर बढ़ गया।

14लेकिन परमेश्वर की बड़ाई हो जो मसीह में हमेशा हमको जीत के जुलूस में लिए चलते हैं। और अपने ज्ञान की खुशबू हमारे द्वारा सब जगह फैलाते हैं। 15क्योंकि हम परमेश्वर के निकट मुक्ति पाने वालों और मुक्ति न पाने वालों (नाश होने वालों) दोनों तरह के लोगों के लिए मसीह की खुशबू हैं। 16कुछ के लिए मरने के निमित्त मौत की गंध और कुछ के लिए जीवन के निमित्त जीवन की खुशबू। क्या कोई इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी लेने के लायक है? 17क्योंकि हम उन बहुत से लोगों की तरह नहीं हैं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं। लेकिन मन की सच्चाई (ईमानदारी) से और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को मौजूद जानकर

2:12 "दरवाज़ा"- प्रे.काम 14:27; 1 कुरि. 16:9; कुल. 4:3; प्रका. 3:8

2:13 "तीतुस"- पौलुस ने तीतुस को कुरिन्थ भेज दिया था (7:6-7) और त्रोआस में उस से मिलने वाला था। जब तीतुस वहाँ नहीं पहुँचा, तब कुरिन्थ की स्थिति के बारे में पौलुस परेशान रहा। उनके लिए उसका प्रेम विशाल था (पद 4)। वह दिल से चाहता था कि वे उसकी चिट्ठियों का उत्तर सही तरीके से दें।

"मकिदुनिया"- 1-16

2:14 कलीसियाओं में समस्याओं और दुनिया में समस्याओं के होने के बावजूद परमेश्वर अपने लोगों को एक जीत के बाद दूसरी जीत देते हैं। रोमि. 8:37 से तुलना करें। "सदा" और "मसीह में" शब्दों पर ध्यान करें। उनके बगैर हमारे प्रयास सदैव सफ़ल नहीं होंगे। उन्हें वह कामयाबी प्राप्त हो सकती है, जिसे लोग कामयाबी समझते हैं, जिसके बदले में उन्हें परमेश्वर से कुछ नहीं मिलेगा हैं।

"खुशबू"- हृदय के लिए मसीह का ज्ञान सुगन्ध महसूस करने वाली इन्द्रिय के लिए कीमती इत्र के समान है। पौलुस और उसके सहकर्मी जहाँ कहीं जाते थे, वहाँ इसे फैलाते थे। क्या हम ऐसा करते हैं?

2:15 "खुशबू"- मुक्ति पाए हुए और मुक्ति न पाए हुए, विश्वासी और अविश्वासी दोनों प्रकार के लोगों के लिए मसीह के सेवक मसीह के सम्बन्ध में ज्ञान फैलाते हैं। इस तरह से वे परमेश्वर के लिए "खुशबू" के समान हो जाते हैं। एक व्यक्ति जिसके कपड़ों पर इत्र लगा है, जहाँ जाता है, खुशबू फैलाता है। एक व्यक्ति जिसमें मसीह है, मसीह के विषय में बात करता है, मसीह के संदेश को दूसरों तक पहुँचाता है, मसीह की सुगन्ध को दूसरों तक पहुँचाता है। विश्वासियों में दुष्टता या संसार की बदबू तक नहीं आनी चाहिए।

2:16 जब मसीह के सेवकों द्वारा संदेश पहुँचाया जाता है, तो विश्वास करने वालों को जीवन देता है, जो ग्रहण नहीं करते उनके लिए मृत्यु। यूहन्ना 3:36 से तुलना करें। इसलिए जो लोग मसीह पर विश्वास करना अस्वीकार करते हैं, सुसमाचार एक मारने वाली सुगन्ध के समान होता है। परन्तु जो लोग विश्वास करते हैं, उनके लिए अनन्त जीवन के लिए सुगन्ध है।

2:17 "वचन में मिलावट"- पौलुस को मालूम था कि ऐसे लोग हैं, जो दावा करते थे कि वे मसीह के सेवक हैं, किन्तु अपने व्यक्तिगत फ़ायदे के लिए मसीह के संदेश को हल्का फुल्का बनाते थे। यूनानी भाषा में "मिलावट" शब्द का अर्थ "खिलवाड़" - भी हो सकता है या दोनों ही अर्थ हो सकते हैं। बेईमान व्यापारी प्रायः अधिक लाभ कमाने के लिए मिलावट करते हैं। कुछ नाम के मसीही कार्यकर्ता इस तरह के हैं। वे जो कुछ भी मिलावट करते हैं, वह मसीह के बारे में है। उनकी सेवा मात्र इसीलिए होती है, कि उन्हें कुछ प्राप्त हो - 1 तीमु. 6:5; यूहन्ना 12:4-6; 2 पतर. 2:15 से तुलना करें।

"सच्चाई"- 1:12,18,19.

"परमेश्वर को मौजूद जानकर"- पौलुस जानता था कि परमेश्वर की आँखें उस पर लगी हुयी हैं। इसी रोशनी में वह जीने का प्रयास करता था। किसी के जीवन में यह सच्चाई एक बड़ा बदलाव ला सकती है।

मसीह में बोलते हैं।

3 क्या हम ने फिर अपनी बड़ाई करनी
शुरू कर दी? या हमें दूसरे लोगों की
तरह सिफ़ारिश की चिट्ठियाँ तुम्हारे पास
लानी हैं या तुम से लेनी हैं? 2हमारे मनों
पर लिखी हुयी चिट्ठी तो तुम ही हो। सब
लोग उन्हें पहचानते और पढ़ते हैं। 3यह
दिख ही रहा है कि तुम मसीह की चिट्ठी
हो, जिसको हम सेवकों ने न तो स्याही
से, न पत्थर की पटियाओं पर, लेकिन
जीवित परमेश्वर के आत्मा से दिल की
मांस रूपी पटियों पर लिखा है।

4मसीह में होकर परमेश्वर पर हमारा ऐसा
ही भरोसा है। 5यह नहीं कि हम अपने आप
में इस लायक हैं, हमारी योग्यता के स्त्रोत

3:1 इन दोनों प्रश्नों का उत्तर "नहीं" है। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि अनुमोदन या प्रशंसा के खत का कोई स्थान नहीं है। उसने स्वयं कभी-कभी दूसरों के लिए प्रशंसा खत लिखे थे (8:16-24; रोमि. 16:1-2; 1 कुरि. 16:3,10,11)। किन्तु यहाँ वह कहता है, कि उसे स्वयं के लिए ऐसा कुछ नहीं चाहिए।

3:2-3 कुरिन्थियों के लोग पौलुस के लिए स्वयं प्रशंसा पत्र थे। एक पत्र से तुलना करें तो मालूम पड़ता है कि उनके बारे में ये बातें कहीं गयी हैं। वे पौलुस और उसके सहकर्मियों के दिल में लिखी हुयी थीं (पौलुस और दूसरे लोग उन में किए कार्य के प्रति जागरूक थे और उन्हें बहुत प्रेम करते थे - 7:3)। वे पौलुस के मन में छिपे पत्र नहीं थे - किन्तु एक पत्र जो कोई भी पढ़ सकता था (पौलुस की सेवकाई द्वारा उन में उत्पन्न बदलाव को हर व्यक्ति देख सकता था)। पत्र "मसीह का" था (यह उसकी योजना, उसका संदेश था, जिससे उन में बदलाव आया था)। ये पौलुस और उसके सहकर्मियों के (मसीह ने उसे इस कार्य में उपयोग किया था) पत्र थे। वे परमेश्वर के आत्मा से उत्पन्न किए गए थे (यूहन्ना 3:5-8 से तुलना करें)। यह "लेखन" उनके दिल में किया गया था (बदलाव मात्र बाहरी नहीं था, किन्तु भीतरी था - 5:17)। उसकी तुलना पौलुस उन नियमों-आज्ञाओं से करता है जो परमेश्वर ने पत्थर की पटियाओं पर दी थी। निर्ग. 31:18; 32:15-16 देखें। यिर्म. 31:33-34; इब्रा. 8:10-12 से तुलना करें।

परमेश्वर के सेवक परमेश्वर के साथ कार्य करते हुए "खत" का निर्माण करते हैं - वे लोग जो वास्तविक रीति से सदा-सदा के लिए बदल डाले जाते हैं। क्या इस पृथ्वी पर इस कार्य से अधिक और कोई बड़ा कार्य है?

3:3-11 इन पदों में पौलुस नयी वाचा से पुरानी वाचा की तुलना करता है। पुरानी वाचा एक सेवा थी, जिससे मृत्यु उत्पन्न हुयी (पद 6,7) किन्तु नयी वाचा जीवन लायी (पद 6) पुरानी वाचा लोगों को दोषी ठहराती थी, नयी दोष को हटाती है और लोगों को धर्मी ठहराती है (पद 9; रोमि. 3:19-24)।

पुरानी वाचा (नियम-आज्ञाएँ) पत्थर पर लिखी हुई थी (निर्ग. 31:18); किन्तु नई लोगों के मनों पर लिखी गई है। पुरानी "मुर्झा रही थी" (पद 11; इब्रा. 8:13), किन्तु नयी स्थायी है (पद 11)।

संक्षेप में पुरानी वाचा नियमों और आज्ञाओं में थी, जो लोगों के मन बदल नहीं सकती थीं (निर्ग. 19:5-6 के नोट्स देखें)। किन्तु नयी परमेश्वर के आत्मा की सेवकाई को लायी, जिससे लोग नए बन जाते हैं (पद 3,6,8)।

पुरानी में कुछ महिमा थी, नयी में उस से अधिक (पद 8-11). ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ लोग कुरिन्थ के मसीहियों को यह कह कर परेशान कर रहे थे, कि उन्हें मूसा के विधान को भी मानना है। प्रे.काम 15:1-2 से तुलना करें। पौलुस दिखाता है कि उनके द्वारा किए जाने वाली व्यवस्था से अधिक महान, सुसमाचार था।

3:4 वह जानता था कि ऊपर बताए गए कार्य में परमेश्वर उसे उपयोग में ला रहे थे। स्वयं मसीह ने उसे आश्वासन दिया था।

3:5 2:16 देखें - जो व्यक्ति बुलाया नहीं गया और तैयार नहीं किया गया वह इस असंभव कार्य को नहीं कर सकता। कार्य में पौलुस का भरोसा, उसकी स्वयं की योग्यताओं में भरोसा नहीं था। वह जानता था कि स्वयं परमेश्वर ने वह सब करने के योग्य उसको बनाया था (1 कुरि. 15:10; कुल. 1:29; यूहन्ना 15:5 देखें)।

तो परमेश्वर हैं। 6उन्हीं ने हमें नयी वाचा के सेवक होने के योग्य बनाया। शब्द के सेवक नहीं लेकिन आत्मा (पवित्र आत्मा) के, क्योंकि शब्द मारता है, किन्तु आत्मा जीवन देता है।

7यदि मौत की वह वाचा जिसके अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, इतने प्रकाश से दमक रही थी, कि मूसा के चेहरे पर के तेज के कारण जो कम होता जा रहा था, इस्त्राएली उसके चेहरे को देख तक नहीं सकते थे, 8तो आत्मा की वाचा और ज़्यादा तेज से भरी क्यों न होगी? 9क्योंकि जब दोषी ठहराने वाली वाचा तेज से भरी थी, तो धर्मी (निर्दोष) ठहराने वाली वाचा और अधिक तेज से भरी क्यों नहीं होगी? 10नयी वाचा की भव्य (अद्वितीय) महिमा से यदि पुरानी वाचा की महिमा की तुलना की जाए तो उसके सामने पुरानी वाचा ठहर ही नहीं सकती। 11क्योंकि जब तेजोमय की चमक कम होती जाती थी तो जो स्थिर (कायम) रहेगा, वह और ज़्यादा चमक (तेज) से क्यों नहीं दमकेगा?

12इसलिए ऐसी आशा रखकर हम हिम्मत से बोलते हैं। 13मूसा की तरह नहीं जिसने अपने चेहरे पर कपड़ा डाल लिया था, ताकि इस्त्राएली उस कम होते हुए तेज के समाप्त होने को न देख सकें। 14लेकिन उनकी अक्ल मारी गयी, क्योंकि आज तक मूसा द्वारा पहुँचाया नियमशास्त्र (आज्ञाएँ, नियम आदि) पढ़ते समय उनके मनों पर वही परदा पड़ा रहता है, लेकिन मसीह में वह उठ जाता है। 15आज तक जब कभी मूसा की किताब पढ़ी जाती है, तो उनके मनों पर परदा पड़ा रहता है। 16लेकिन जब कभी उनका दिल प्रभु की तरफ़ मुड़ेगा, तब वह परदा उठ जाएगा 17प्रभु तो आत्मा है और जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है, वहीं आज़ादी है। 18लेकिन जब हम सब के

3:6 प्रत्येक व्यक्ति के पास जिसे परमेश्वर उसके कार्य के लिए भेजते हैं यह भरोसा हो सकता है या है, कि परमेश्वर उस कार्य को करने के योग्य हैं। मत्ती 26:28; यिर्म. 31:31-34; इब्रा. 8:6-13 में नयी वाचा पर नोट्स देखें। जो पद 2-3 में है, वही "खत" का अर्थ यहाँ नहीं है। यहाँ इसका अर्थ भिन्न है। यहाँ "खत" का अर्थ वह पुरानी व्यवस्था है, जिसमें नियम और रीति विधियाँ है। इसलिए कोई उसे पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकता था, इसलिए इस से मौत उत्पन्न होती थी। इसलिए यह मौत मनुष्य को मौत का दोषी ठहराती थी (रोमि. 7:9-11; गल. 3:10; रोमि. 3:19-20; 4:15; 5:20; 8:3 आदि देखें)। किन्तु नयी वाचा परमेश्वर की आत्मा से जीवन लाती है (रोमि. 7:6; 8:2-4,11; यूहन्ना 3:5-8)।

3:7 "मूसा के चेहरा"- निर्ग. 34:29-35 देखें।

3:12 "आशा"- रोमि. 5:2-5; 8:23-25 भविष्य में अद्‌भुत बातों की आशा ने पौलुस को वर्तमान में साहसी बनाया।

3:13 निर्ग. 34:29-35 महिमा को देखकर इस्राएलियों को डर लगा। नयी वाचा डर नहीं, किन्तु आशा साहस और आनन्द लाती है।

3:14-16 वह मूसा के चेहरे पर पड़ी हुयी ओढ़नी से आत्मिक सीख निकालता है। 14 वें पद में वह उनके बारे में कह रहा है, जो तब तक पुरानी वाचा में थे-यहूदी और वे गैरयहूदी जिन्होंने यहूदी धर्म को अपनाया था। उनके मन अक्रियाशील हैं और उनके मनों पर पर्दा पड़ा हुआ है (पद 15)। जो कुछ वे पुराने नियम में पढ़ते हैं, उसे समझते नहीं। 4:3-4 देखें। यहूदियों से कहे गए यीशु के शब्दों से जो यूहन्ना 5:39-40,46,47 आदि में हैं, उन से तुलना करें। केवल मसीह अन्धकार और गलतफ़हमी का पर्दा हटा सकते हैं और लोगों को सत्य जानने और परमेश्वर को जानने में मदद कर सकते हैं (पद 14,16; मत्ती 11:27; यूहन्ना 8:12,31,32; 14:6)।

3:17 जिस तरह से यीशु और परमेश्वर का आत्मा एक हैं, उसी तरह पिता और पुत्र एक हैं (यूहन्ना 10:30; 14:9)। परमेश्वर के आत्मा को रोमि. 8:9 में मसीह का आत्मा कहा गया है। मत्ती 3:16-17 आदि में त्रिएकत्व पर नोट्स देखें।

"आज़ादी"- परमेश्वर का आत्मा अनेक प्रकार की आज़ादी देता हैः नियमों से (रोमि. 7:4,6; गल. 5:18), डर से (रोमि. 8:15), पाप से (रोमि. 6:14,18)। यूहन्ना 8:36 से तुलना करें।

उघाड़े चेहरे से प्रभु का तेज (प्रकाश) इस तरह दिखता है, जिस प्रकार आइने में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा हैं हम उस तेजस्वी रूप में थोड़ा-थोड़ा बदलते जाते हैं।

4 इसलिए जब हम पर ऐसी दया (कृपा) हुयी, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हार नहीं मानते 2लेकिन हम ने शर्म के छिपे हुए कामों को छोड़ दिया है। हम न चालाकी से जीते हैं और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं। लेकिन हम सच्चाई को सामने रखकर, परमेश्वर के सामने (मौजूदगी में) हर एक इन्सान के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं। 3लेकिन यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है तो यह बर्बाद हो जाने वाले लोगों के कारण है। 4उन विश्वास न करने वालों के लिए जिन की बुद्धि को इस दुनिया के ईश्वर ने अँधा कर दिया है , ताकि मसीह जो परमेश्वर के प्रतिरूप हैं, उनके प्रकाशमय सुसमाचार का

3:18 "दिखता है"- मसीह में सभी विश्वासी परमेश्वर की कुछ खासियत को देखते हैं (4:6)। उनके पास कुछ आत्मिक समझ है। इस सम्बन्ध में कुछ ज्ञान है, किन्तु यह सब एक खराब दर्पण में देखने के समान है। 1 कुरि. 13:12 से तुलना करें। मात्र परछाईं दिखती है। वह पूरी सच्चाई नहीं, जो मसीह को आमने-सामने देखने से मिलेगी। अभी विश्वासी लोग बदलते जा रहे हैं। बाईबल के जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "बदलाव" - हुआ है, वह यहाँ चार बार न्यू टेस्टामॅन्ट में आया है, मत्ती 17:2; मरकुस 9:2; रोमि. 12:2. यह भीतरी बदलाव के विषय में है जो बाहर प्रगट होता है। जहाँ तक मसीह का सवाल है, इसका सम्बन्ध बाहरी प्रगट होने से था, जो उसके अनुरूप था जो वह भीतर था। जहाँ तक विश्वासियों का सवाल है यह भीतरी एवं बाहरी परिवर्तन था। पहले भीतरी फिर बाहरी।

यह धीरे-धीरे होने वाली प्रक्रिया है - "थोड़ा-थोड़ा"। भजन 84:7; नीति. 4:18 से तुलना करें। यहाँ परमेश्वर उन्हें मसीह के समान बनाते जा रहे हैं। अन्ततः उनके आने पर, वे लोग पूरी तरह से उनके समान हो जाएंगे। (रोमि. 8:29; 1 यूहन्ना 3:1-2)।

यह प्रक्रिया अभी इतनी धीमी हो सकती है, कि विश्वासी यह सोच सकता है, कि कुछ हो रहा है या नहीं। किन्तु प्रत्येक परमेश्वर की सच्ची सन्तान में ऐसा है।

4:1 नयी वाचा में परमेश्वर के सेवकों ने महिमा से परिपूर्ण सेवा को ग्रहण किया है। यह मूसा की सेवकाई से बड़ी है (3:9)। वे लोग दोषी ठहराने वाले नियमों के सेवक नहीं है किन्तु उस कृपा के, जो बचाती है। यह सेवकाई उन्हों ने परमेश्वर की दया से पायी है, न कि व्यक्तिगत योग्यता के कारण (1 कुरि. 15:10; 1 तीमु. 1:13-14). इसलिए पौलुस कहता है, कि समस्त समस्याओं के बावजूद वह निराश नहीं होगा (पद 16; 1 कुरि. 15:58; लूका 18:1 से तुलना करें)।

4:2 1:12; 2:17 देखें। पौलुस अपनी खराई पर ज़ोर डालता है, क्योंकि कुछ लोग वह स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। वह यह जानता था कि यदि उन्हें उसकी प्रेरिताई पर विश्वास नहीं है, तो उस से चर्च की बड़ी हानि होगी।

4:3 3:14-16 देखें। यहाँ पौलुस मात्र विश्वास न रखने वाले यहूदियों की बात नहीं करता है, किन्तु प्रत्येक देश के अविश्वासियों के बारे में।

4:4 "इस दुनिया के ईश्वर"- इसका अर्थ है शैतान। यूहन्ना 12:31; 16:11 से तुलना करें। उसे इस संसार का ईश्वर कहा गया है क्योंकि वह उपासना चाहता हे और उसे मिलती भी है। इसलिए भी कि वह अन्धकार (शैतान का राज्य) के दायरे पर राज्य करता है (इफ़ि. 6:12)। 1 इति. 21:1; मत्ती 4:1-10; यूहन्ना 8:44 में शैतान पर नोट्स देखें।

"बुद्धि...दिया है"- का अर्थ है शैतान लोगों को परमेश्वर के सत्य से अनजान रखना माँगता है। वह उन्हें आत्मिक दृष्टि नहीं पाने देता। हाँ, यह उनके सहयोग ही से संभव है (यूहन्ना 3:19-20; 2 थिस्स. 2:10-11)।

"परमेश्वर के प्रतिरूप"- इब्रा. 1:3; फ़िलि. 2:6; कुल. 1:15; 2:9; यूहन्ना 1:14,18; 12:45; 14:9. वह अदृश्य परमेश्वर का दृष्य रूप है।

"प्रकाशमय सुसमाचार"- सुसमाचार परमेश्वर की महिमा को प्रगट करता है। उसके अभिषिक्त यीशु मसीह को भी (यूहन्ना 12:23)।

प्रकाश उन पर न चमक सके। 5क्योंकि हम अपना नहीं लेकिन यीशु मसीह का संदेश देते हैं कि वह प्रभु हैं। हम अपने बारे में बताते हैं कि हम यीशु मसीह के कारण तुम्हारे सेवक हैं। 6इसलिए कि परमेश्वर ही हैं, जिन्होंने कहा, "अँधेरे में रोशनी हो जाए।" उन्हों ने ही इस रोशनी को हमारे दिलों में चमकाया, ताकि हम प्रभु यीशु में परमेश्वर के व्यक्तित्व (स्वभाव और चरित्र आदि) को देख सकें।

7हमारे पास यह खज़ाना मिट्टी के बरतनों में है, ताकि यह मालूम पड़ जाए कि यह असाधारण सामर्थ्य परमेश्वर की ओर से है और हम इसके स्त्रोत नहीं हैं। 8हम सभी ओर से सताव सह रहे हैं, लेकिन पिस नहीं गए। उलझन में तो पड़ते हैं, लेकिन निराश नहीं होते। 9हमें सताया तो जाता है, लेकिन त्यागे नहीं जाते। गिराए तो जाते हैं, लेकिन मिट नहीं जाते। 10जिस तरह से यीशु मारे गए, उसी तरह हर समय हम मारे जाने के

"उन पर न चमक" - इसका अनुवाद हो सकता है "उनके द्वारा देखा न जा सके"

4:5 इस पत्र में पौलुस अपनी प्रेरिताई पद के ऊपर होने वाले हमलों के विरोध में बचाव पक्ष को रखता है। किन्तु यह सब उन सब की भलाई के लिए था। (1:12-24 पर नोट्स देखें) उसने खुद को मुक्ति का एक मार्ग नहीं बताया। उसने सुसमाचार का अविष्कार नहीं किया था। वह खुद को बड़ा नहीं समझता था। वह खुद को दूसरों के लिए गुलाम समझता था (1 कुरि. 3:5-7; 9:19-23)। जो उसके स्वयं से बढ़कर था यानि कि मसीह, उसके बारे में उसका संदेश था। उसने यह घोषणा की, कि वह स्वर्ग और पृथ्वी के मालिक हैं। लूका 2:11; रोमि. 10:9; 1 कुरि. 8:6; 12:3; प्रे.काम 2:36; फ़िलि. 2:10-11.

4:6 भौतिक प्रकाश की सृष्टि (उत्पत्ति 1:1-3) से मसीह के द्वारा विश्वासियों में चमकने वाली आत्मिक ज्योति से पौलुस तुलना करता है। परमेश्वर उनकी समझ की आँखों को खोलता है ताकि सच्चाई का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इसके पहले, जैसा मन दूसरों का है, उनका मन भी अन्धकार और बर्बादी से भरा हुआ था। इफ़ि. 1:18; प्रे.काम 26:18; यूहन्ना 8:12; मत्ती 6:22-23; 11:27; 16:17; 1 कुरि. 2:11-16.

परमेश्वर जिस ज्ञान को देते हैं, उस पर ध्यान दें। इस शिक्षा का सम्बन्ध गलत शिक्षा से कि मनुष्य यह 'जान' सकता है कि वह स्वयं ईश्वर है, कुछ लेना देना नहीं है। वह शिक्षा शैतान का भयंकर धोखा है। मनुष्य परमेश्वर नहीं है; वह परमेश्वर नहीं बन सकता है। यदि वे ऐसा सोचते हैं, तो बड़ी गलती में पड़े हैं। सच्चा ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ है कि मनुष्य यह समझता है कि मसीह में परमेश्वर की महिमा है (इब्रा. 1:3), मनुष्य में नहीं। दमिश्क के रास्ते पर जाते समय पौलुस को यह अनुभव हुआ था प्रे.काम 9:3-9. हम में से अधिक लोगों को अचानक मिलने वाला ऐसा अजीब अनुभव नहीं है। प्रत्येक विश्वासी ने आत्मिक दृष्टि और ज्योति पायी है और ज्योति की सन्तान है (यूहन्ना 12:36; इफ़ि. 5:8; 1 थिस्स. 5:5)।

"परमेश्वर के व्यक्तित्व"- 3:13 से तुलना करें। पुरानी वाचा की महिमा जो मूसा के चेहरे से प्रगट होती थी, समाप्त होती जा रही थी।

नयी वाचा के संस्थापक यीशु मसीह में कभी समाप्त नहीं होगी।

4:7 "खज़ाना"- मसीह में परमेश्वर की शान का ज्ञान सब से बड़ा खज़ाना है। भजन 19:10; 119:72,127; नीति. 2:1-5. खज़ाने से पौलुस का अर्थ सुसमाचार की वह सेवकाई भी हो सकती है जो उसे सौंपी गयी थी। उसकी दृष्टि में यह भी बड़ी बात थी (इफ़ि. 3:8)।

"मिट्टी के बरतनों"- इसका अर्थ है हमारा कमज़ोर स्वभाव, शरीर, प्राण और आत्मा। यह सब मिट्टी के बर्तन के समान है। खज़ाना तो कीमती है, किन्तु रखने के बर्तन बहुत कमज़ोर और बिना आकर्षण के हैं। यह दिखाता है, कि इसी कीमती खज़ाने को दूसरों को देना या नयी वाचा की सेवकाई करना (3:6) परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर है। तुलना करें प्रे.काम 1:4-5,8.

4:8-12 इन पदों में पौलुस इन "मिट्टी के बर्तनों" - की कमज़ोरी को दिखाता है जो "खतरे में", "सताव में" से होकर जाते हैं। लेकिन वह कार्य करने वाली परमेश्वर की सामर्थ को भी दिखाता है। यदि परमेश्वर की सामर्थ इन मिट्टी के बर्तनों में कार्यरत नहीं थी, तो वे कुछ बड़ा कार्य नहीं कर सकते थे। वे तो नाश भी हो सकते थे।

खतरे में रहते हैं, ताकि यीशु (जो जी उठे) का जीवन हमारी देह से दिखायी देता रहे। 11हम जीते जी हमेशा यीशु की वजह से मौत के हवाले किए जाते हैं, ताकि यीशु का जीवन हमारी मरणशील देह में प्रगट होता रहे। 12हम तो मौत का सामना करते रहते हैं, लेकिन तुम्हें आत्मिक लाभ होता है।

13इसलिए कि हम में वही विश्वास की आत्मा है जिसके बारे में लिखा है, "मैंने विश्वास किया, इसलिए मैंने कहा।" इस कारण हम भी विश्वास करते हैं, इसलिए बोलते हैं। 14क्योंकि हम जानते हैं कि जिन्होंने (परमेश्वर ने) प्रभु यीशु मसीह को जिलाया, वही हमें भी यीशु में जिलाएँगे। वह हमें तुम्हारे साथ अपनी उपस्थिति में खड़ा होने देंगे। 15सब कुछ तुम्हारे फ़ायदे के लिए ही है। जैसे-जैसे परमेश्वर का अनुग्रह ज़्यादा लोगों तक पहुँचता जाता है, धन्यवाद में भी बढ़ती होती जाती है। इस तरह से परमेश्वर की महिमा अधिक होती है।

16इसलिए हम हताश नहीं होते, हालांकि हमारी देह कमज़ोर होती जा रही है, फिर भी हमारा भीतरी जीवन (मनुष्यत्व) दिन प्रतिदिन नया (मज़बूत) होता जा रहा है। 17क्योंकि हमारा क्षण भर का कम सताव

4:11 "मौत"- 1:8-9 देखें। जो पौलुस ने सहा, वही यीशु ने भी सहा था। पौलुस ने "यीशु के लिए" - पद 11, जो कुछ सहा - वास्तव में यह इस में मसीह के लिए मरना था। पौलुस के लिए इसका अर्थ था निरन्तर खतरों और समस्याओं को झेलना (11:23-27)। खुद के लिए मरना, मत्ती 10:38-39 से तुलना करें (लूका 9:23) और केवल यीशु मसीह के लिए जीना (गल. 2:20)। व्यक्तिगत योजनाएँ और आकांक्षाएँ, उसके राज्य की रूचि-अरूचि, आराम, आमोद प्रमोद - इन का सब का उसके हृदय में कोई स्थान नहीं था। इसी प्रकार यीशु के जीवन में इन सब का स्थान नहीं था। पौलुस ने देखा कि यह जीने का तरीका, आत्मिक जीवन और उसमें यीशु का कार्य करने वाला जीवन था (पद 11)। इसका अर्थ यह भी था कि जिस प्रकार से कुरिन्थ के विश्वासियों में जीवन आया, दूसरों को भी हासिल हो (पद 12) यहाँ एक सङ्घा सिद्धान्त है - 'जो लोग चाहते हैं कि वे दूसरों के लिए आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में एक माध्यम हों, वे खुद अपने जीवन में मरने का अनुभव कर सकें। यूहन्ना 12:24-26 देखें। जो इसके लिए तैयार नहीं हैं, वे अपने जीवन को सफ़ल समझ सकते हैं, किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में यह सफ़लता नहीं है।

4:13-14 भजन 116:10 तमाम कठिनाईयों और विरोध के बावजूद कौन सी ऐसी बात थी, जिसके फलस्वरूप पौलुस मसीह की सेवा में लगा रहा। उसने परमेश्वर पर भरोसा किया और शान्त नहीं रहा। यह आशीषित भविष्य के विषय में निश्चय था। भविष्य में विश्वासियों का जी उठना एक बड़ी आशा थी, जिससे वह आगे बढ़ता रहा (रोमि. 8:23-25; 1 कुरि. 15:49-58)।

4:15 पौलुस के सभी दुःख और अनुभव दूसरों की भलाई के लिए थे। यही वह चाहता भी था - कुल. 1:24; 1 कुरि. 10:33; 2 तीमु. 2:10. परमेश्वर के जिस सेवक का यह रवैया होगा, वह उसके लिए और दूसरों के लिए लाभदायक ही होगा। पौलुस के इस रवैये को देखें, कि परमेश्वर को धन्यवाद मिले - (1:11; 9:11-13)।

4:16 इस अध्याय के कुछ विषय।

"हताश नहीं होते"- पद 1 नाश भी होता - पद 7-12 नया होता जाता - पद 10,11 प्रतिदिन वह मौत का साम्हना करता था (1 कुरि. 15:31). किन्तु परमेश्वर ने भी उसे प्रतिदिन जीवन दिया।

4:17 "क्षण भर का"- पौलुस की समस्याएँ उसके बदलाव के बाद आरम्भ हुयीं और लम्बे समय या जीवन के अन्त तक बनी रहीं। किन्तु पौलुस के दृष्टिकोण से, अनन्तकाल की तुलना में वे सब क्षण भर की थीं। हमें भी ऐसा रवैया अपनाना चाहिए।

"सताव"- उसकी समस्याओं और कठिनाइयों पर ध्यान दें - पद 8-10; 1:8; 11:23-27. पौलुस उन्हें हल्का सा कहता है। उसका कहने का मतलब यह है कि भविष्य के इनाम की तुलना में यह कुछ मायने नहीं रखता। हम अपनी छोटी-छोटी समस्याओं के विषय क्या कहें? क्या हम अपने ऊपर तरस खाएँ और शिकायत करें? यदि हम ने ऊपरी बातों को सीखा है, जिन्हें पौलुस ने सीखा था तब नहीं।

(दुख) हमारे लिए बहुत ज़रूरी और सदा
काल की महिमा (शान, आदर, अधिकार)
उत्पन्न करता जाता है। 18क्योंकि हम दिखने
वाली बातों पर नहीं, लेकिन जो नहीं
दिखता, उस पर अपना ध्यान लगाए हुए
हैं। क्योंकि देखी चीजें कुछ समय की हैं
और जो दिख नहीं रहा है, वह सदा काल
(हमेशा) के लिए है।

5 हमें मालूम है कि तम्बू की तरह हमारी
यह देह उतारी और लपेटी जाएगी। हमें
परमेश्वर की ओर से एक नया घर (शरीर)
मिलेगा। एक ऐसा घर जिसे हाथों से बनाया
नहीं गया होगा, लेकिन अनन्तकालिक घर।
2इस तंबू में हम कराहते हैं और स्वर्गिक
घर को पहनने के लिए लालायित रहते हैं।
3हम स्वर्गिक देह को ज़रूर पहनेंगे। हम
मात्र देहरहित आत्मा नहीं होंगे। 4इस देह
में हम बोझ से दबे कराहते रहते हैं। यह
नहीं कि हम मर जाना चाहते हैं, ताकि इस
पहनी हुयी देह को उतार सकें। लेकिन यह
कि हम अपनी नयी देह को पहनना चाहते
हैं, ताकि इस मरणहार देह को अमरता
निगल ले। 5जिसने हमें इस उद्देश्य के लिए

"हमारे लिए... उत्पन्न करता जाता है"- जो लोग मसीह के लिए दुःख उठाते हैं, उनके लिए वह अनन्त काल के लिए भलाई उत्पन्न करती हैं।

विश्वासी जिस आदर, सम्मान को प्राप्त करने वाले हैं, उनको प्राप्त करने में वे क्लेश सहायक हैं। रोमि. 8:17-18,28 से तुलना करें।

4:18 यही कारण था, जिसकी वजह से जो कुछ हुआ, पौलुस उसे सह सका। उसकी निगाह में सभी कठिनाइयाँ हल्की फ़ुल्की थीं। हम अनदेखी बातों पर ध्यान कैसे लगा सकते हैं? यह परमेश्वर द्वारा प्राप्त आत्मिक समझ पर निर्भर है (पद 6)। यह विश्वास द्वारा स्वीकार करना है कि न दिखने वाली परमेश्वर की अनन्तकालिक बातें वास्तविक हैं (इब्रा. 11:1)। पद 5:7 में वह उन बातों को दूसरे शब्दों में कहता है। हम अपनी इन आँखों से संसार, अपनी समस्याओं और कठिनाईयों को देखते हैं। अपने विश्वास की आँखों और आत्मिक समझ से हम मसीह के चेहरे में देख सकते हैं (4:6) और अनन्तकाल में भी। अदृश्य एवं अनन्त बातों पर अपनी आँखें लगाने से हमारे रोज़मर्रा के जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा।

5:1-10 जिन अदृश्य अनन्त बातों के विषय में पौलुस ने बताया है, उनका वर्णन वह यहाँ करता है - अनन्त घर 1-4, सदैव प्रभु के साथ रहना (पद 8), अन्तिम न्याय और पुरस्कार (पद 10)। इन सभी पर उसने अपने आँखें स्थिर कर रखी थीं।

5:1 "हमें मालूम है"- पौलुस जो कहता है वह मात्र कल्पना नहीं है। यह वह ज्ञान है जो परमेश्वर के सत्य के प्रकाशन पर टिका हुआ है। "पृथ्वी का घर" - का मतलब है हमारे भौतिक शरीर (पद 4)। वे मरेंगे - यदि मृत्यु, मसीह के आगमन से पहले आती है (1 कुरि. 15:51-52).

"परमेश्वर की ओर से एक नया घर"- जो सदा काल का है, का क्या अर्थ है? इसके अर्थ के सम्बन्ध में असहमति है। शायद वह यूहन्ना 14:2 के "पिता के घर" - की ओर संकेत कर रहा था। इब्रा. 11:10; 13:14; प्रका. 21:10-27; लूका 16:9 भी देखें। या पौलुस देह के जी उठने की बात कर रहा जो मसीह लोग मसीह के आने पर प्राप्त करेंगे (1 कुरि. 15:35-53)। यदि तम्बू, हमारी वर्तमान की देह है, घर का अर्थ, भविष्य में मिलने वाली देह होगी जो तम्बू के साथ अस्थायी नहीं होगी।

5:2 "कराहते"- रोमि. 8:23 देखें। यहाँ भी वही अर्थ हो सकता है। "पहिनना" - किसी व्यक्ति या व्यक्ति की आत्मा के ओढ़ने को दिखाता है, न कि एक शहर को जो स्वर्ग में रहने का एक अनन्त स्थान है।

5:3 यहाँ "देह रहित" का अर्थ आत्मा हो सकती है, जो बिना देह के होती है।

5:4 इसका अर्थ यह संभव है कि विश्वासी इसलिए नहीं कहरते हैं कि वे अपनी देह से छूटना चाहते हैं, किन्तु इसलिए कि नयी देह चाहते हैं। "पहिनने" और "मरणहार देह को अमरण निगल ले।" पुनः जीवित हुये शरीर के बारे में पौलुस की भाषा है जो 1 कुरि. 15:54 में है।

5:5 विश्वासी परमेश्वर के हाथ के बनाए हुए हैं, नयी सृष्टि हैं (पद 17; इफ़ि. 2:10)। उन्होंने हमें स्वर्गिक "घर" से ढाँकने के लिए बनाया है (पद 2) - एक रहने का घर जो स्वर्ग में है। यूहन्ना 6:39-40 देखें।

तैयार किया है, वह परमेश्वर हैं। उन्हीं ने हमें पवित्रात्मा बयाने में दिया है।

6इसलिए हम हमेशा निडर रहते हैं। हम जानते हैं कि जब हम इस धरती पर ज़िन्दा हैं तो हम (जी उठे) यीशु के साथ नहीं हैं। 7बिना देखे हुए सिर्फ़ भरोसा रखकर ही हम जीवित हैं। 8हम उमंग (साहस, हिम्मत) से भरे हुए हैं और हमारी चाह तो यह है कि इस देह से मुक्त हो जाएँ और प्रभु के साथ ही रहें। 9चाहे हम इस देह में हैं या नहीं, खास बात है - प्रभु को खुश करना। 10हम सभी को एक दिन प्रभु यीशु के इन्साफ़ के तख्त के सामने खड़े होना पड़ेगा, ताकि देह में किए गए अच्छे और बुरे कामों का हिसाब दें।

11इसलिए कि हम जानते हैं कि प्रभु के डर में जीना क्या है, हम लोगों के सामने सच्चाई रखते हैं। परमेश्वर और तुम्हें मालूम है कि इस में हमारी नियत क्या है। 12ऐसा कहकर हम तुम्हारी वाह-वाह की अपेक्षा नहीं कर रहे हैं लेकिन हम चाहते हैं कि तुम हमारे ऊपर घमण्ड कर सको, ताकि उनको जवाब दे सको जो दिल के भीतर की बातों के बजाए दिखावटी बातों पर मन लगाते हैं। 13यदि हम जोशीले हैं, तो परमेश्वर के लिए हैं। यदि हमारा मन ठिकाने

"बयाने"- या जमापूंजी या "गारण्टी" । इसका अर्थ स्पष्ट है - खरीदी मूल्य का थोड़ा भाग आरम्भ में दिया जाता है, जो कि पूरी रकम का एक भाग होता है। 1:22 और इफ़ि. 1:14 देखें। प्रत्येक विश्वासी को परमेश्वर यह देते हैं जो यह दिखाता है कि वह सभी वायदों को पूरा करेंगे और भविष्य में मीरास का अधिकारी बनाएँगे। हमें यह सोचना भी नहीं चाहिए कि परमेश्वर अपने मन को बदलेंगे और वायदे को तोड़ेंगे। क्योंकि उन्हों ने अपनी आत्मा दे दी है, वह प्रतिज्ञा की हुयी भविष्य की आशीषों से हमको वंचित नहीं रखेंगे।

5:6-8 परमेश्वर द्वारा दी गयी सच्चाई के ऊपर पौलुस का ज्ञान और भरोसा आधारित है। 1 कुरि. 2:9-16 से तुलना करें। इन पदों में वह यह नहीं कहता है, कि हमारे पृथ्वी के इस जीवन में वह हमारे साथ नहीं हैं। वह सभी विश्वासियों के साथ हैं - 13:5; मत्ती 28:20; यूहन्ना 17:20-23. किन्तु विश्वासी अभी स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में नहीं हैं। पौलुस कहता है कि मरने पर वे उसकी उपस्थिति में जाते हैं। फ़िलि. 1:23-24 भी देखें। लूका 23:43; यूहन्ना 17:24 से तुलना करें। 5:7 4:18 देखें।

5:9 इसलिए कि विश्वासी मसीह की उपस्थिति में प्रवेश करने वाले हैं और उसके साथ रहेंगे, इस से उनके जीवन जीने के तरीके पर असर पड़ना चाहिए। जो लोग मसीह को खुश करना चाहेंगे, वे खुद को खुश नहीं करेंगे। वे मसीह के आदर-सम्मान और दूसरों की भलाई के लिए जीएँगे। तुलना करें पद 15; 1 कुरि. 9:19-23; 10:31. जो लोग मसीह को खुश नहीं करना चाहते, वे परमेश्वर के सच्चे सेवक नहीं है।

5:10 रोमि. 14:10-12; 2:6; 1 कुरि. 3:13-15 जिन कार्यो के लिए पुरस्कार मिलना चाहिए, विश्वासियों को मिलेगा, जो मसीह के लायक नहीं है, पुरुस्कार नहीं मिलेगा।

5:11 "प्रभु के डर"- इसका अर्थ आदरयुक्त भय से है। रोमि. 3:18; उत्पत्ति 20:11; भजन 34:11-14; 111:10; नीति. 1:7. आने वाले इन्साफ़ के ख्यालों से यह बात उसके दिमाग में आयी होगी।

उसकी सामर्थी सेवकाई के पीछे यह प्रेरणादायक बात थी।

5:12 1:12-14; 3:1-3 यहाँ वह अपनी खिलाफ़त करने वालों की तरफ़ इशारा करता है (11:13-15)। वह चाहता था कि विश्वासी उसमें घमण्ड करें। यह कि उसे सच्चा प्रेरित और परमेश्वर के वचन का शिक्षक समझें। तभी मसीही लोग उन झूठे शिक्षकों को उत्तर दे सकते थे, जो केवल बाहरी बातों में घमण्ड किया करते थे।

5:13 क्या उसके विरोधियों ने उसे पागल समझा? क्या विश्वासियों ने यह समझा कि पौलुस असामान्य व्यवहार करता था? (मरकुस 3:21; प्रे.काम 26:24; 1 कुरि. 4:10)। वह चाहता है कि वह जो कुछ भी था उसका व्यवहार उन्हें जैसा भी लगा, वह सभी उसके स्वयं के लिए नहीं किन्तु उनके लिए अच्छा था। यूहन्ना 2:17 से तुलना करें।

पर है, तो इस से तुम्हें फ़ायदा है। 14मसीह का प्रेम हम को बेबस कर देता है। और हम इस बात से कायल हैं कि यीशु मर गए थे इसलिए हम भी अपने पुराने जीवन (परमेश्वर रहित जीवन) के लिए ख़त्म हो चुके हैं। 15और वह (यीशु) इसलिए सब के लिए मरे कि जो जीवित हैं, वे भविष्य में अपने लिए न जीएँ, लेकिन उनके (यीशु के) लिए जो उनके (लोगों के) लिए मरे और फिर से जी उठे।

16इसलिए अब से हम किसी को शरीर (दुनियावी दृष्टिकोण) के अनुसार नहीं समझेंगे। हालांकि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, लेकिन अब से ऐसा नहीं जानेंगे। 17इसलिए यदि कोई मसीह पर विश्वास ला चुका है, तो वह

5:14 पद 11 में जो सेवकाई का उद्देश्य है, उस से बढ़कर यहाँ है। सृष्टिकर्ता और दूसरों के लिए सब कुछ करना कैसे संभव है? मसीह का प्रेम और उसके मन में इसका अनुभव (रोमि. 5:5) एक ज़ोर लगाने वाला बल था, जो उसे परमेश्वर के कार्य के लिए प्रेरित करता रहा, तुलना करें लूका 12:50. जैसा सभी विश्वासियों में, उसी प्रकार उसमें मसीह था। उसी प्रकार मसीह का प्रेम उसमें था। इसलिए कि वह पूरी तरह से मसीह के प्रति समर्पित था, मसीह के प्यार के प्रति भी समर्पित था। यहाँ मसीह का प्रेम का अर्थ मसीह के लिए प्रेम नहीं किन्तु सभी लोगों के लिए मसीह का प्रेम है। 1 यूहन्ना 4:10,19 से तुलना करें। गल. 2:20 देखें। "बेबस" इस यूनानी शब्द का अर्थ है "पकड़े रहना", "बनाए रखना" "साथ में बान्धना" "ज़ोर से दबाना" "गिरफ़्त में लेना", "दबाव डालना"। निस्सन्देह मसीह का प्रेम यह सब कर सकता है।

"मर गए थे"- मसीह सभी के लिए मरे। लोगों के गुनाह के लिए उन्हें मरना जरूरी था। वह उनके स्थान पर मरे (पद 19; यूहन्ना 1:29; 3:16; 1 तीमु. 2:6; इब्रा. 2:9)। 1 पतर. 3:18; 1 यूहन्ना 2:2. इस तरह परमेश्वर की दृष्टि में "सभी मर गए" - जब मसीह मरे मानव जाति के एवज़ी और प्रतिनिधि के साथ जो कुछ हुआ वह सब मानो सारी मानव जाति के साथ हुआ। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी लोग मुक्ति पा जाएँगे। लोग मात्र इसलिए बच नहीं जाएँगे क्योंकि मसीह उनके लिए मर गए - उन्हें परमेश्वर के साथ मेल करना पड़ेगा (पद 20)। उन्हें मन बदलाव कर के मसीह को अपनाना होगा (लूका 13:3; यूहन्ना 3:36; 8:24; प्रे.काम 17:30)। उन्हें उनकी मृत्यु में दफ़नाए जाने की ज़रूरत है (रोमि. 6:3)। नहीं तो किसी के लिए मुक्ति नहीं।

मसीह की मौत से यह संभव है, कि परमेश्वर सभी लोगों को क्षमा करें। किन्तु यह तभी संभव है जब क्षमा के लिए वे परमेश्वर की ओर मुड़ें और मसीह के द्वारा मुक्ति पाएँ। "सभी के लिए मरे" का एक और संभावित अर्थ है वह यह कि चुने हुए (यूहन्ना 6:37; 17:6), जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें दिया था, उनके लिए मसीह मरे। अधिकांश बाईबल के जानकार इस मत से सहमत हैं किन्तु हम नहीं। चाहे हमारा मत कुछ क्यों न हो, एक बात निश्चित है, मसीह की मौत के फ़ायदे उनके लिए हैं जो उस पर विश्वास करते हैं, सभी के लिए नहीं।

5:15 यहाँ मसीह की मौत का एक बड़ा उद्देश्य था - वह यह कि लोगों को उनके स्वार्थी और स्वकेन्द्रित जीवन शैली से आज़ाद करें और उन्हें मसीह में केन्द्रित बनाए। रोमि. 14:9 भी देखें! यह हम पौलुस के जीवन में देखते हैं (पद 9)। क्या यही बदलाव हमारे भीतर हुआ? क्या हमारा विश्वास खरा है? उनकी मौत में बपतिस्मा लेने का अर्थ, उनके पुनरूत्थान में बपतिस्मा लेना भी है। यह एक जीवन की नयी शैली को दिखाता है (पद 17; रोमि. 6:4-7)। अपने लिए जीना विनाश लाता है। मसीह के लिए जीने में पूरी आशीष है। मत्ती 10:37-39; लूका 9:23; 14:26.

5:16 मसीह का विश्वासी बनने से पहले, पौलुस बिना आत्मिक समझ के था। वह मसीह को और दूसरों को बाहरी बातों से परखता था। यूहन्ना 8:15 से तुलना करें। मसीह की मृत्यु का अर्थ जानने से उसका बाहरी देखने का दृष्टिकोण बदल गया। इसके परिणामस्वरूप, वह सब कुछ मसीह के सन्दर्भ में देखने लगा।

5:17 "इसलिए"- शब्द इस से पहले के पदों से जोड़ता है। मसीह में एक व्यक्ति 'नयी सृष्टि' है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि उसका यीशु मसीह, दूसरों और स्वयं के प्रति दृष्टिकोण पहले के समान न होगा।

"मसीह"- यूहन्ना 17:20-21; रोमि. 6:3,5; 8:1; 1 कुरि. 1:1; 12:12-13; इफ़ि. 1:1,4.

एक नयी रचना है। पुरानी बातें बीत गयी और सब बातें नई हो गई हैं (नया जीवन शुरू हो गया है) 18ये सभी बातें (नयी) परमेश्वर की ओर से हैं, जिन्होंने यीशु मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल कर लिया। उन्हीं ने हमें यह काम दिया कि हम दूसरे लोगों का सम्बन्ध परमेश्वर से करा दें। 19अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ दुनिया का मेल-मिलाप कर लिया और लोगों के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और यही मेल (सम्बन्ध जोड़ने) के संदेश को देने का काम हमारे सुपुर्द कर दिया। 20इसलिए हम परमेश्वर के राजदूत हैं, मानो हम मसीह में होकर बोल रहे हैं, "परमेश्वर के साथ अच्छे सम्बन्ध बना लो।" 21जो (यीशु) पाप से

"नयी रचना"- आत्मिक जन्म की ओर इशारा है (यूहन्ना 1:12-13; 3:3-8; तीतुस 3:5; 1 पतर. 1:23)। जिन लोगों ने यह अनुभव किया है, वे वैसे ही नहीं रह सकते। स्वयं के लिए जीवित रहना और दूसरों को एवं मसीह को सांसारिक दृष्टिकोण से देखना चला जाता है। पुराने विचार, नियत और सिद्धान्त समाप्त हो जाते हैं। नया सत्य, इसके आधार पर जीवित रहना, नयी इच्छाएँ और नयी प्रवृत्तियाँ मन में आती हैं। यह मात्र पौलुस जैसे लोगों के बारे में सत्य नहीं है, किन्तु प्रत्येक के लिए जो मसीह में है।

5:18 "परमेश्वर की ओर से"- यूहन्ना 1:13; इफ़ि. 2:10; 4:24; याकूब 1:18. लोग नयी शुरुआत कर सकते हैं, किन्तु वे नया जीवन आरम्भ नहीं कर सकते है, यह असंभव है, जैसे वे किसी की सृष्टि नहीं कर सकते (उत्पत्ति 1:1)।

"मेल"- का मतलब है दुश्मनों को मित्र बना लेना या अलगाव एवं दुश्मनी के कारण को हटाना। पाप ने लोगों को परमेश्वर का शत्रु बनाया है (रोमि. 5:10; कुल. 1:21)। उनके पाप के कारण परमेश्वर का गुस्सा उन पर था (रोमि. 1:18; गिनती 25:3; भजन 90:7-11; यूहन्ना 3:36 पर परमेश्वर के क्रोध पर नोट्स देखें)। स्वयं से मेल कराने के लिए परमेश्वर को उन बातों से निबटना पड़ा, जिनसे परमेश्वर को क्रोध आया था और जिसके कारण उन से वे अलग हो गए थे। ऐसा परमेश्वर ने अपने बेटे को संसार में बलिदान के रूप में भेजने के द्वारा किया (पद 14 के पद देखें)। "मसीह के द्वारा" - परमेश्वर ने लोगों से मेल किया। इफ़ि. 2:16; कुल. 1:2,22. ऐसा करने के बाद वह अपने सेवकों को सु-संदेश देने के लिए भेजते हैं।

5:19 यह मेल का वह संदेश है, जिसे परमेश्वर ने अपने सेवकों को दिया है ताकि वे उसकी घोषणा करें। 18 पद में पौलुस कहता है, परमेश्वर ने हमारे साथ मेल कर लिया। अब इस संसार के साथ मेल करवाने की बात करता है। यह बीते हुए समय में हुआ था। मसीह की मौत के द्वारा, परमेश्वर ने मेल हो जाने की नींव रखी, ताकि जो चाहे इसका लाभ उठाए। परमेश्वर ने उनके पापों की ओर ध्यान नहीं दिया। उन्हों ने मानवजाति के गुनाहों को उठाकर मसीह के ऊपर रख दिया (पद 21; यूहन्ना 1:29; यशा. 53:5-6)। इसका यह मतलब नहीं है कि प्रत्येक मुक्ति पा चुका। इसका अर्थ है कि प्रत्येक की मुक्ति के लिए एक मार्ग खुल चुका है। मुक्ति पाने के लिए लोगों को वह सब ग्रहण करना चाहिए जो परमेश्वर ने उनके लिए किया है और मसीह पर भरोसा करना चाहिए। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो नाश हो जाएँगे (यूहन्ना 3:16,36)।

5:20 मेल मिलाप के कार्य में परमेश्वर का कार्य दोहरा है - अपने बेटे को उन्हों ने हमारे गुनाहों के लिए मरने के लिए भेजा। वह अपने सेवकों को सभी स्थानों में भेजते हैं ताकि इस सत्य को फैलाएँ। लोगों को भी कुछ करना है - वह है मसीह में उपलब्ध मेल को प्राप्त करना। इसका मतलब है, मन परिवर्तन और मसीह के संदेश पर भरोसा करना। पौलुस (और वह भी जिसे परमेश्वर सुसमाचार सुनाने के लिए भेजते हैं) मसीह के "राजदूत" हैं।

राजदूत वह है जो किसी एक व्यक्ति और दूसरे लोगों के स्थान पर जाता है। वह स्वयं के अधिकार से न ही कार्य करता है, न बोलता है। वह कहता वही है, जो कहने के लिए भेजा जाता है। मसीह स्वर्ग में हैं। उनके राजदूत उनके नाम से इस पृथ्वी पर बोलते हैं और संदेश देते हैं। यीशु, उन से बिनती करते हैं। कुरिन्थ के विश्वासियों का परमेश्वर से मेल हो चुका था। देखें कि परमेश्वर कैसे लोगों से याचना करते हैं तुलना करें यहेज. 18:30-32 से।

5:21 यहाँ चार सत्य हैं।

पहला, मसीह निष्पाप थे (यूहन्ना 8:46; इब्रा.

अछूते थे, उन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए पाप बना दिया, ताकि हम उन में होकर परमेश्वर की सच्चाई बन जाएँ।

6 इसलिए कि हम सभी साथ में काम करने वालों की तरह एक साथ मिलकर परमेश्वर का काम कर रहे हैं, हम यह भी निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के अनुग्रह को बेकार न जाने दें। 2परमेश्वर ने कहा था, "सही वक्त पर मैंने तुम्हारी सुन ली और मुक्ति के दिन मैंने तुम्हारी मदद की।" देखो, यही वह सही वक्त है, अभी ही मुक्ति का समय है।

3हम इस तरह जीवन जी रहे हैं, कि किसी बात में किसी के लिए रूकावट का कारण न बनें। यह भी कि किसी को हमारी सेवा में कोई खोट न दिखे। 4सब कुछ जो हम करते हैं, हम यह दिखाते हैं, कि हम परमेश्वर के सच्चे सेवक हैं, बड़े धीरज में, सताव में, गरीबी में, संकटों में। 5पिटाई में, जेलखाने में डाले जाने में, दंगों में, परेशानियों में, मेहनत करने में, जागने में, भूखा रहने में। 6पवित्रात्मा में, ज्ञान में, धीरज में, कृपालुता में, पवित्र आत्मा में,

---

4:15; 7:26; 1 पतर. 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)।

दूसरा, परमेश्वर ने उन्हें पाप बना डाला - परमेश्वर ने सारे दुनिया के गुनाहों को उन पर लाद दिया और मसीह ने उनके बदले दण्ड उठाया। परमेश्वर ने यीशु को गुनाह समझा। मनुष्य का हर प्रकार कर अपराध, दुष्टता, हिंसा, भ्रष्टाचार और अन्य सभी प्रकार की बुराई को परमेश्वर के पवित्र बेटे के नाम पर कर दिया गया।

तीसरा, यह सब "हमारे लिए" था (पद 14; 1 पतर. 3:18; 1 यूहन्ना 4:10) परमेश्वर ने वह सब यीशु के नाम पर कर डाला ताकि वह सब हमारे खाते में न रहे।

चौथा, परमेश्वर का उद्देश्य यह था कि मसीह यीशु में विश्वासी, परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। यह धर्मी ठहराए जाने की ओर इशारा है (रोमि. 3:21-26 पर नोट्स देखें) और मसीह के साथ एकता की ओर भी (यूहन्ना 17:20-23; रोमि. 6:3-8; इफ़ि. 1:1,4)। मसीह खुद परमेश्वर की धार्मिकता हैं (1 कुरि. 1:30; रोमि. 3:21-24; प्रे.काम 3:14)। विश्वासी उन से जुड़े हुए हैं, इसलिए उसमें धार्मिकता बन गए हैं। जो कुछ मसीह परमेश्वर के सामने हैं, वही विश्वासी उनके सामने हैं।

6:1-2 "साथ में काम करने वालों - 5:20; 1 कुरि. 3:9 परमेश्वर की कृपा का मतलब वह दया है जिसके बारे में 5:21 में बतलाया गया है। इसे "बेफ़ायदा न जाने दो" - ग्रहण करने का अर्थ होगा, सुनना, जानना और इस विषय में कुछ न करना। इसका मतलब इस प्रकार से इसे ग्रहण करना है, कि जीवन पर इसका प्रभाव न हो और परिणाम 'मुक्ति' न हो। इस बात पर ज़ोर डालने के लिए वह यशा. 49:8 की ओर इशारा करता है। मुक्ति का दिन अभी है - मसीह में प्रगट किया गया परमेश्वर की दया का युग।

6:3-10 पौलुस अपनी सेवकाई को सही ठहराता है। देखें 1:12-14. उसका इस बात पर ज़ोर दिया जाना उसके डर को दिखाता है। वह यह कि कुरिन्थ के कुछ या अधिक लोग उसे मसीह का राजदूत स्वीकार करने के बजाए बिगड़े हुए सुसमाचार के देने वाले झूठे शिक्षकों को ग्रहण करें। इसीलिए वह उनके सामने अपने चालचलन और अनुभव को रखता है। इन सब बातों से प्रगट होता है कि वह परमेश्वर का सच्चा सेवक था।

6:3 वहाँ पर कुछ लोग उसकी सेवकाई को बेकार समझते थे। उसने यह फ़ैसला किया था कि वह खुद ऐसा नहीं करेगा।

6:4-5 1:8; 4:8-9; 11:23-29; 1 कुरि. 4:9-13 से तुलना करें। इन सब बातों को धीरज से सहते हुए उन्हों ने दिखा दिया, कि वे मसीह के सच्चे सेवक हैं। जिन झूठे शिक्षकों को कुरिन्थ में स्वीकार किया गया था, उनके और पौलुस के जीवन में कितना अन्तर था, इन बातों को वहाँ के मसीही लोगों को अपनी आँखों से देखना चाहिए था।

6:6-7 परमेश्वर के लिए उसकी सेवा में प्रगट गुण और सामर्थ के विषय में वह कहता है। प्रत्येक मसीह के सेवक को ये गुण रखने चाहिए और बढ़ाते जाना चाहिए। वह कहता है कि उसके जीवन में ये फल इस बात का सबूत हैं कि वह परमेश्वर का सेवक है, एक झूठा भविश्यद्वक्ता नहीं। मत्ती 7:16-20 से तुलना करें।

सच्चे प्रेम में, 7सच्चाई के संदेश में, परमेश्वर
की शक्ति में, दाएँ-बाएँ आत्मिक हथियारों
को लेकर 8इज़्ज़त और बेइज़्ज़ती में, यश
और अपयश में, बदनामी और बड़ा नाम
पाने में, धोखा देने वालों की तरह दिखते
हैं, लेकिन ऐसे हैं नहीं। 9अनजानों की
तरह हैं, लेकिन मशहूर हैं, मरते हुओं की
तरह हैं, लेकिन फिर भी ज़िन्दा हैं, सज़ा
पाए हुओं (मार खाने वालों) की तरह हैं,
फिर भी जान से मारे नहीं जाते। 10शोक
करने वाले दिखते हैं, लेकिन हमेशा खुश
रहने वाले हैं। दिखने में गरीब हैं, लेकिन
दूसरों को अमीर बना देते हैं। हम दिखने
में फक्कड़ हैं लेकिन सब कुछ रखते हैं।

11हे कुरिन्थयों, हम ने सब कुछ ईमानदारी
से कह डाला है। हमारा दिल तुम्हारे लिए
खुला हुआ है। 12हम ने अपने प्रेम में किसी
तरह की कमी नहीं रखी है, लेकिन तुम बहुत
नाप-तौल कर प्रेम दिखाते हो। 13तुम्हें अपने
बच्चों की तरह जानकर मैंने तुम से बातचीत
की - तुम भी खुले दिल से प्रेम दिखाओ।

14जो लोग मसीह पर विश्वास नहीं
लाए हैं, उनके साथ साझे में कुछ मत
करो। इसलिए कि धार्मिकता (उचित

6:7 "हथियारों"- 10:4; इफ़ि. 6:11-17. उसके अस्त्र-शस्त्र चालाकी नहीं, धोखा नहीं, कठोरता और हिंसा नहीं, किन्तु धार्मिकता के हथियार थे। सच्चे परमेश्वर ने उसे दिए थे और पौलुस ने उन्हें सही तरीके से उपयोग किया (1:12)।

6:8-10 लोग क्या कहते हैं, इन सब की परवाह न कर के, वह सेवा करता रहा। कमी घटी, भावनाओं की गिरावट और दुःखों के बावजूद, उसने सेवा जारी रखी। सभी हालातों में वह सिद्ध रहा था कि 5:14 सत्य है।

6:10 "शोक करने वाले"- 2:4; 5:4; रोमि. 9:2-3; 7:24. इस दुनिया में चर्च में अनेक कारण हैं, जो प्रभु के सेवकों को दुखी करते हैं। इन सभी के बीच पौलुस के मन में से खुशी का झरना बहता रहता था। 2:3; 7:4; रोमि. 5:11; 14:17; गल. 5:22.

"गरीब"- प्रे.काम 3:6; लूका 6:20; 1 तीमु. 6:6-9. पौलुस के पास वरदान और योग्यताएँ थीं। यदि वह चाहता तो काफ़ी धन कमा सकता था। उसने उस मसीह की शिष्यता को स्वीकार किया जो हमारे लिए निर्धन बने ये (मत्ती 8:20)।

"फक्कड़...हैं"- फ़िलि. 3:8; मत्ती 19:27; 1 कुरि. 3:21-22 से तुलना करें।

6:11-13 हृदय खोलने का मतलब है, "जगह बनाना"। यह प्रेम और देख रेख को दिखाता है - 7:2-3. प्रायः मसीहियों के मन जकड़े और संकरे होते हैं। उन्हें केवल अपने स्वार्थ की बातें याद रहती हैं तुलना करें फ़िलि. 2:4,21.

6:14-18 इस जरूरी सच्चाई को पौलुस सामने रखता है - मसीह में विश्वासी विशेष लोग हैं - और उन्हें ऐसा व्यवहार भी करना चाहिए। व्यव. 7:3-6; 1 पतर. 2:9-12; यूहन्ना 17:6-10,17-19. 14 पद एक ऐसा सिद्धान्त दिखाता है जो सभी विश्वासियों के लिए, सभी स्थानों में सभी समयों में लागू होता है। उन्हों ने अविश्वासियों के साथ अत्याधिक निकट की साझेदारी नहीं करनी चाहिए।

6:14 "साझे में"- इसका अर्थ है किसी सामान्य लक्ष्य और कार्य में बहुत मिलजुल कर कार्य करना व्यव. 22:10 देखें। विश्वासी मसीह के साथ जोड़े गए हैं। मत्ती (11:28-29)। इसलिए जो मसीह को ठुकराते हैं, उनके साथ बहुत निकटता का सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। निश्चित रीति से विश्वासी अविश्वासी के बीच शादी भी नहीं होनी चाहिए। (1 कुरि. 7:39; एज्रा 9:1-2; नहे. 13:23-27; मला. 2:12)। झूठे शिक्षक जो उल्टा सीधा प्रचार करते हैं और जो बाईबल के आधारभूत सिद्धान्तों का विरोध करते हैं, उनके साथ भी संगति नहीं करना है। निस्सन्देह पौलुस विश्वासियों को ऐसे स्थान में कार्य करने से मना नहीं कर रहा है जहाँ अविश्वासी कार्य करते हैं। वह उन से काम लेने के विरोध में भी नहीं है। इसका यह अर्थ भी नहीं है, कि उन्हें अविश्वासियों से अपना नाता तोड़ लेना चाहिए (1 कुरि. 5:9-10)। मसीह के लिए जीतने के लिए पौलुस खुद उनके साथ सम्पर्क रखता था (1 कुरि. 9:19-23; मत्ती 11:19 से तुलना करें)। यहाँ वह अविश्वासियों के साथ सामान्य लक्ष्य और निकट की संगति की मनाही करता है। उन सम्बन्धों की भी जो बाईबल के सिद्धान्तों से समझौता करने के लिए मजबूर करते हैं या मसीह के साथ विश्वासियों की सहभागिता को खतरे

करने वालों) और अंधकार (अनुचित करने वालों) में एकता कैसे बनी रह सकती है? या रोशनी और अँधेरा एक साथ कैसे आ सकते हैं? 15मसीह और शैतान कैसे एक सहमति बना सकते हैं? या मसीही और गैर मसीही का क्या सम्बन्ध? 16क्या परमेश्वर के भवन और मूर्तियों के बीच कोई समझौता संभव है? क्योंकि हम (चर्च) परमेश्वर का जीवित भवन हैं। जैसा कि परमेश्वर ने कहा भी था, "मैं उन में रहूँगा और उनके बीच चला-फिरा करूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होवेंगे।" 17इसलिए प्रभु कहते हैं, "उनके बीच में से निकलो और अलग हो जाओ और जो कुछ अशुद्ध है, उसे मत छुओ, तब मैं तुम्हें अपनाऊँगा। 18"मैं तुम्हारा पिता होऊँगा, तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होगे" सर्वशक्तिमान प्रभु का कहना यही है।

7 हे प्रियो, इसलिए कि हमें कीमती वायदे (प्रतिज्ञाएँ) मिले हैं, तो आओ हम उन सब बातों (मलिनता) से अपने आपको शुद्ध करें जो हमारी देह और आत्मा को अशुद्ध कर सकती हैं। इस तरह से हम परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता की

में डालते हैं। जो विश्वासी इस असमान जूए में न जुतने के सिद्धान्त को गंभीरता से नहीं लेता, वह अपने जीवन में समस्या को बुला रहा है।

पद 14-16 में पौलुस पाँच प्रश्न पूछता है यह दिखाने के लिए कि विश्वासियों का अविश्वासियों के साथ मेल कितना गलत है। वस्तुएँ एवं लोग जिनमें कोई सामान्य बात नहीं होती हैं, मात्र दिखाना नहीं चाहिए कि ऐसा है। दुष्टता से अलगाव और दुष्ट लोगों से अलगाव, परमेश्वर के लोगों के लिए, परमेश्वर की ओर से आज्ञा है (पद 17)।

"रोशनी"- विश्वासी रोशनी में हैं, रोशनी से प्रेम करते हैं। वे ज्योति की सन्तान हैं (मत्ती 5:14; यूहन्ना 3:21; 8:12; इफ़ि. 5:8; 1 थिस्स. 5:5)। अविश्वासियों की स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है (यूहन्ना 3:19; इफ़ि. 6:12; 1 यूहन्ना 2:9,11)।

इसलिए क्या जानते-बूझते एक साथ कार्य करने का साहस विश्वासियों को करना चाहिए?

6:15 "शैतान"- इस इब्रानी शब्द का अर्थ है "बेकार और दुष्ट" । यहाँ पौलुस इस शब्द को शैतान के लिए इस्तेमाल करता है।

विश्वासी मसीह से जोड़े गए हैं, अविश्वासी शैतान से (इफ़ि. 2:2; यूहन्ना 8:44)।

6:16 विश्वासी परमेश्वर का मन्दिर हैं (1 कुरि. 3:16; 6:19; इफ़ि. 2:21-22)। अविश्वासी या तो सचमुच की मूर्तियों की उपासना करते हैं या (मन की मूर्तियों की इफ़ि. 5:5) या स्वयं को मूर्ति बना लेते हैं। इसलिए दो बिल्कुल भिन्न प्रकार के लोगों के बीच किस प्रकार का समझौता हो सकता है। कुछ पुराने नियम के पदों की ओर इशारा कर के परमेश्वर के मन्दिर के अर्थ को बताना है - लैव्य. 26:11-12; यिर्म. 32:38; यहेज. 36:27.

6:17-18 इस भाग को निश्चित सारांश देने के लिए, पौलुस पुराने नियम का उदाहरण देता है। किसी एक पद के लिए वह एक सही-सही उदाहरण नहीं देता है, किन्तु यशा. 52:11-12; 2 शमू. 7:14; यिर्म. 31:9; यशा. 43:6 आदि पद उसके मन मे होंगे। जो लोग एक भिन्न प्रकार के पवित्र लोग होना चाहते हैं, देखें कि एक बड़ी बात वह उनके सामने रखता है। वे इस दुनिया की संगति और आमोद-प्रमोद को खो देता है, किन्तु वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सहभागिता प्राप्त करते हैं। बहुत से लोग दोनों ही चाहते हैं, किन्तु यह संभव नहीं है (याकूब 4:4)।

7:1 परमेश्वर की महान प्रतिज्ञाओं को सुनने के बाद हमें पहले जैसा नहीं रहना चाहिए। परमेश्वर हमें वचन देते हैं और अपनी दया दिखाते हैं, ताकि हम उनकी मानें और पवित्र बनें। ऐसे अलग किए हुए आनन्दित लोग, जैसा वह चाहते हैं रोमि. 12:1-2; 1 कुरि. 15:58; इफ़ि. 4:1; कुल. 3:1; तीतुस 2:11-14 से तुलना करें। यहाँ मसीह का राजदूत कहता है कि पवित्रता में हमें सिद्ध बनते जाना चाहिए (13:9,11 भी देखे)।

"परमेश्वर का भय"- 5:11; 1 पतर. 1:17 देखें। हम में पवित्रता को बढ़ाने के लिए, परमेश्वर का भय ज़रूरी है (अय्यूब 28:28; भजन 34:11-14)।

ओर बढ़ें करें।

2हमारे लिए अपने दिलों को खुला रखो,
हम ने न किसी का बुरा किया, न किसी को
बर्बाद किया और न ही किसी से फ़ायदा
उठाया। 3मैं तुम्हें दोषी ठहराने के लिए
यह नहीं कह रहा हूँ। क्योंकि मैं पहले ही
से यह कह चुका हूँ कि तुम हमारे दिल में
इस तरह बस गए हो, कि हम तुम्हारे साथ
जीने और मरने को तैयार हैं। 4मुझे तुम पर
काफ़ी भरोसा है और घमण्ड भी। हमारी
सारी परेशानियों (कष्टों, सताव) के बावजूद
तुम ने हमें साहस दिया और खुश किया।

5जब हम मकिदुनिया आए थे, हमारी
देह को कुछ सुकून नहीं मिला। हम चारों
तरफ़ से सताव (परेशानियों) से घिरे हुए
थे - बाहर संघर्ष था और मन में डर।
6लेकिन परमेश्वर ने जो हताश हुए लोगों
की हिम्मत बढ़ाते हैं, तीतुस के आने पर
हमारी हिम्मत बढ़ायी। 7सिर्फ़ उसके आने
ही से हमें प्रोत्साहन नहीं मिला, लेकिन इस
कारण भी कि तुम ने उसका साहस बढ़ाया
था। मेरी खुशी और ज़्यादा इसलिए भी
बढ़ गयी, क्योंकि उसने हमारे प्रति तुम्हारी
लगन, तुम्हारे दुख और हमारे लिए चिन्ता
के बारे में भी खबर दी।

8क्योंकि हालांकि मैंने अपने पहले खत
से तुम्हें शोकित किया था, लेकिन उससे
पछताता नहीं, जैसा कि पहले पछताता था।
क्योंकि मैं देखता हूँ कि उस पत्र से तुम्हें
जो शोक हुआ वह थोड़ी देर के लिए ही
था। 9अब मैं खुश हूँ लेकिन इसलिए नहीं
कि तुम्हें शोक पहुँचा, लेकिन इसलिए कि
तुम ने उस शोक की वजह से मन बदला।
क्योंकि तुम्हारा शोक परमेश्वर की इच्छा
के अनुसार था कि हमारी तरफ़ से तुम्हें
किसी बात में नुकसान न पहुँचे। 10जो

"पवित्रता...बढ़ें"- पर मत्ती 5:48 में नोट्स देखें। निश्चित रीति से वह नहीं चाहेगा कि हम आधे, चौथाई या दस में से 9 भाग ही पवित्र रहें - यह तो उसके बराबर है कि हम आधा, चौथाई और दस में से एक भाग ही पवित्र रहें। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि उतने पवित्र हों जितना मसीह इस पृथ्वी पर थे।

सिद्धता का लक्ष्य रखना और इसे प्राप्त करना एक ही बात नहीं है। आत्मिक रीति से कहें, तो दुनिया एक अशुद्ध स्थान है और यहाँ विश्वासी आसानी से अशुद्ध हो सकते हैं। यूहन्ना 13:10 देखे। विश्वासियों के पास पापमय स्वभाव भी है जो उनके लिए फन्दा बन सकता है। देखे रोमि. 7:18; गल. 5:16-17; 1 यूहन्ना 1:8 आदि।

शब्द "सिद्धता" एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया को दिखाता है। जो सिद्धता का कार्य अभी जारी है, वह एक क्षण में नहीं हो सकता। पवित्रता में सिद्ध होने के क्षेत्र में विश्वासियों को कुछ करना है - यह ऐसा कोई अनुभव नहीं जो उन्हें बैठे-ठाले मिल जाता है। 1 कुरि. 9:27; कुल. 3:5; 1 यूहन्ना 3:3 से तुलना करें। यह कार्य हमारे अपने बल से नहीं किया जा सकता है। - रोमि. 8:13; गल. 5:16. पवित्रीकरण पर यूहन्ना 17:17-19 में देखें; लैव्य. 20:7 में पवित्र पर देखें।

7:2-3 6:11-13 देखें.

7:4 "खुश"- यहाँ उसका आनन्द यह था कि कुरिन्थ में मसीही (शिष्य लोग) अपने विश्वास में स्थिर थे और परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानने का प्रयत्न कर रहे थे।

7:5 पौलुस, जो कि महान प्रेरित था, बिना डर, बेचैनी और संघर्ष का जीवन नहीं बिता रहा था (2:13)।

7:6 1:3-4 देखें तीतुस ने कुरिन्थ में भेंट दी और मकिदुनिया में पौलुस के पास आया था।

7:8 2:3-4 देखें क्योंकि उसने उन्हें एक बड़े खतरे में देखा था, एक कड़ा पत्र लिखा जिससे उन्हें काफ़ी चोट लगी। ऐसा इसलिए था, क्योंकि वह उन से बहुत प्रेम करता था और वचन की सच्चाई में मज़बूत करना चाहता था। प्रेम कमज़ोर और मात्र भावना नहीं है। ऐसा नहीं है, कि प्रेम के कारण डाँट न लगायी जाए और लोग नाश हो जाएँ।

7:9 पौलुस के खत के द्वारा जो दुःख उन्हें हुआ उसका परिणाम अच्छा हुआ - वह था 'मन बदलाव'। उन्हों ने कुछ दुष्टता को छोड़ दिया। झूठे मार्ग से हटे और पूरे मन से परमेश्वर की ओर मुड़े।

शोक (दुख) परमेश्वर की ओर से होता है, वह मन बदलाव (पश्चाताप) लाता है और इसका परिणाम उद्धार है। ऐसा शोक हमारे अंदर पछतावा (आत्मग्लानि) नहीं उत्पन्न करता है, लेकिन दुनियावी शोक मौत (बर्बादी) लाता है। 11देखो, इस परमेश्वर की ओर से शोक (परमेश्वर भक्ति शोक) ने तुम्हारे जीवन में कितना बदलाव पैदा किया है - ऐसी तत्परता अर्थात् अपने को निर्दोष साबित करने की चाह, कितना रोष, कितना डर, कितनी लालसा, कितना जोश तथा सज़ा देने (न्याय) की इच्छा उत्पन्न हो गयी है। तुम ने इस तरह से यह साबित कर दिया है, कि तुम इस बात में निर्दोष हो।

12तुम्हें लिखे जाने में मेरा उद्देश्य यह नहीं था कि किसने अन्याय किया, किसके साथ अन्याय हुआ, इस पर गौर किया जाए। लेकिन यह कि परमेश्वर की निगाह में यह साफ़ दिख जाए कि तुम हमारे प्रति कितने गंभीर हो। 13इसलिए हमें तसल्ली मिली। इसके साथ ही तीतुस की खुशी देखकर हम और भी आनन्दित हो उठे, क्योंकि तुम सब से उसका जी हरा-भरा हो गया था। 14इसलिए कि यदि मैंने तुम्हारे बारे में उसके सामने कुछ घमण्ड दिखाया, तो शर्मिन्दा न हुआ। परन्तु जिस तरह से हम ने तुम से सब बातें सच-सच कह दी थीं, वैसे ही हमारा घमण्ड दिखाना तीतुस के सामने भी सच निकला। 15जब उसको तुम्हारे आज्ञाकारी होने की याद आती है कि कैसे तुम ने उसे आदर सम्मान से अपनाया, तो उसका तुम्हारे प्रति प्यार उमड़ पड़ता है। 16मुझे बहुत खुशी है, क्योंकि मैं तुम पर पूरा भरोसा रख सकता हूँ।

8 हे भाइयो-बहनो, हम अब परमेश्वर की उस महान कृपा (अनुग्रह) के बारे में बताना चाहते हैं, जो मकिदुनिया की कलीसियाओं (चर्चों) पर हुआ है। 2हर तरह

7:10 "जो...होता है"- एक ऐसा शोक है जो परमेश्वर उत्पन्न करते हैं। एक ऐसा शोक जो परमेश्वर की आत्मा को दुःखित करता है (इफ़ि. 4:30)। ऐसा शोक जिन्हें होता है, वह उन्हें उन सभी बातों से अलग करता है, जो बातें परमेश्वर को दुःखित करती हैं और चोट पहुँचाती हैं।

"दुनियावी"- शोक परमेश्वर से सम्बधित नहीं है, किन्तु खुद से है। यह कुछ खो जाने पर या निराशा से या अपनी इच्छा पूरी न होने से, कष्ट होने से या किसी दुष्टता में पकड़े जाने से होता है। इस से आत्मग्लानि होती है, किन्तु सच्चा पश्चाताप् नहीं (मत्ती 27:3-5)। लोग दुनिया की शोक के साथ दुष्टता में बने रहते हैं। जैसे कि हर एक दूसरी बात जो दुनिया की है, मौत की ओर ले जाती है, यह आत्मिक मौत की ओर ले जाती है।

7:11 देखें कि ईश्वरीय शोक और पश्चात्ताप कैसे साथ-साथ कार्य करता है।

7:12 देखें 2:9 "हमारे लिए" का अर्थ है परमेश्वर के सत्य के प्रति भी समर्पित। यह पौलुस के लिए महत्वपूर्ण बात थी।

7:13-16 ये पद इस बात का सबूत हैं, कि विश्वासी एक दूसरे को किस प्रकार से हरा भरा कर सकते हैं। एक दूसरे से प्रोत्साहन और आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। वे मन की उस खुशी को भी दिखाते हैं जो आत्मा जीतने वाले के मन में तब होता है जब शिष्य सत्य पर चलते हैं - 3 यूहन्ना 3,4.

8:1 यह और अगला अध्याय उन विश्वासियों की ओर इशारा करता है जो गरीब थे, आवश्यकता में थे। देखें 1 कुरि. 16:1-4. उन स्थानीय बात पर अपने विचार प्रगट करने के साथ वह देने के सम्बन्ध में कुछ सुन्दर सिद्धान्त देता है।

8:1-5 मकिदुनिया में कलीसियाओं ने (इस में फ़िलिप्पी और थिस्सुलुनीके की कलीसियाएँ भी थीं) अद्भुत रीति से देने के गुण को दिखाया था - इस गुण को परमेश्वर ने उन कलीसियाओं में डाला था (पद 1)। वहाँ विश्वासी बहुत गरीब थे और सताव सह रहे थे। इसके बावजूद उन्हों ने दान दिया। उन्हों ने 'बड़ी खुशी' के कारण ऐसा किया था। पौलुस ने उन पर ऐसा करने के लिए ज़ोर नहीं डाला था। वे यह जानते थे कि मसीह और उनके लोगों को देना एक सुनहरा अवसर था न कि कष्टदायक कर्तव्य।

संसार में सभी मण्डलियों और विश्वासियों को यह सत्य सीखना चाहिए। ऐसा जानने और उसके अनुसार करने से कलीसियाओं और संसार में बड़ी आशीष होगी।

के क्लेश द्वारा उनकी जाँच में उनकी बड़ी
खुशी और भारी गरीबी में उनकी उदारता
बहुत बढ़ गयी। 3मैं उनके बारे में साक्षी देता
हूँ कि उन्हों ने अपनी योग्यता से अधिक
दिया और वह भी अपनी मर्ज़ी से। 4इस
दान में और पवित्र लोगों की मदद करने में
हिस्सेदार बनने के लिए उन्हों ने बार-बार
हमसे बिनती की। 5हमारी आशा से बढ़कर
उन लोगों ने पहले अपने आपको प्रभु के
प्रति समर्पित किया और बाद में परमेश्वर
की इच्छा से हमारे प्रति भी अपना समर्पण
किया। 6इसलिए हम ने तीतुस को सलाह
दी कि जैसी शुरूआत उसने पहले की थी,
वैसी ही तुम्हारे बीच में इस दान के काम
को भी पूरा कर ले। 7इसलिए जिस तरह
तुम लोग हर दायरे में विश्वास, वचन, ज्ञान,
सब तरह की कोशिश और उस प्रेम में जो
हमसे रखते हो, बढ़ते जाते हो, वैसे ही इस
दान के काम में भी आगे बढ़ते जाओ। 8मैं
आज्ञा की तरह नहीं लेकिन दूसरों के जोश
से तुम्हारे प्यार की सच्चाई को परखने के
लिए कहता हूँ।

9तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह
को जानते हो कि वह धनी होने के बावजूद
तुम्हारे लिए गरीब बन गए, ताकि उनकी
गरीबी से तुम समृद्ध हो जाओ।

10इस बात में मेरी सलाह यह है, यह
तुम्हारे लिए फ़ायदेमंद है कि जो कुछ तुम
ने पिछले साल शुरू किया और जिसके
चाहने में भी तुम ही प्रथम (पहले) थे।
11तुम्हारे लिए अच्छा यह है कि अब
यह काम तुम पूरा करो। तुम्हारी शुरू में
दिखायी गयी तत्परता तुम्हारे दान से मेल
खाए और वह भी तुम्हारी पूंजी के अनुसार

8:5 पौलुस की आशा से अधिक उन्हों ने किया। उन्हों ने न केवल अपना धन दिया, किन्तु जैसी आवश्यकता यीशु के सेवकों को थी, अपने आप तक को दे दिया, इस बात में उन्हें खुशी थी कि उन्हों ने अपने आपको और अपने धन को दिया। रोमि. 12:1-2 से तुलना करें।

8:6 तीतुस कुरिन्थ गया था (7:6) पौलुस पुनः उसे भेजना चाहता है (पद 16-18)।

"पूरा कर ले"- ऐसा लगता है कि कुरिन्थ के लोगों ने जिस पैसे की प्रतिज्ञा की थी, या जो दे सकते थे, अभी तक नहीं दिया था (9:5)।

8:7 1 कुरि. 1:5-7.

8:8 "आज्ञा की तरह"- वह यह जानता था कि देने की इच्छा मन से खुद निकलनी चाहिए। परमेश्वर दबाव वाली और बिना इच्छा वाली भेंट से खुश नहीं होते हैं (9:7)। जो प्यार से देता है, उस से वह खुश होते हैं। देना मसीह के लिए एक व्यक्ति के मन को दिखाता है। यह सदा सत्य है। जो व्यक्ति मसीह को नहीं देता, वह उस से प्यार भी नहीं करता। चाहे ऐसा व्यक्ति कितने ही दावे क्यों न करे। देने के सम्बन्ध में, आज्ञा देने के बजाए, पौलुस उनके सामने एक उदाहरण रखता है। पद 9 में वह एक और बड़ा उदाहरण देता है।

8:9 प्रभु यीशु मसीह के पास जो देने की प्रवृत्ति थी वह बिना किसी सीमा की थी। जो कुछ उनके पास था, वह सब यीशु ने प्रेम से दे दिया। वही सब विश्वासियों के लिए एक नमूना है।

"वह धनी"- यूहन्ना 1:1-3; 17:5; कुल. 1:16; इब्रा. 1:2.

"होने के बावजूद...बन गए"- लूका 2:7; मत्ती 8:20; 17:27; 27:46; फ़िलि. 2:6-8; यशा. 53:2-6.

यह तुम्हारे लिए था, यानि कि सभी विश्वासियों के लिए। मसीह ने हमसे प्रेम किया और अपने आप को दे दिया यूहन्ना 10:11-18; गल. 2:20. वह चाहते थे कि हम "समृद्ध हो जाएँ" - बैंक में रखे धन से नहीं, किन्तु वह धन जिसके विषय में मत्ती 19:28-29; यूहन्ना 14:2-3; रोमि. 8:17; 1 कुरि. 3:21-23; इफ़ि. 1:3,7,8; 1 पतर. 1:4; प्रका. 21:7. यह उनके अपना सब कुछ त्याग देने से संभव था' - इसका मतलब है कि यदि मसीह ने अपराधियों के स्थान पर मरने के लिए अपना सब कुछ न दे दिया होता, तो किसी ने भी मुक्ति की आशीष को प्राप्त न किया होता। प्रेम और देने की शैली के संदर्भ में प्रेरितों ने प्रभु के नमूने को अपनाया - 6:10; प्रे.काम 3:6; मत्ती 19:27. क्या हम ऐसा करते हैं?

8:11-12 हमारा देना, हमारे पास जो है. उसके अनुपात में होना चाहिए 1 कुरि. 16:2. निर्धन अधिक नहीं दे सकते, धनी लोगों को थोड़ा नहीं देना चाहिए।

हो। 12क्योंकि जहाँ मन से दिया जाता है, वह ग्रहण योग्य होता है। जो तुम्हारे पास है उस आधार पर न कि इस पर कि किसी के पास क्या नहीं है।

13मैं यह नहीं कहना चाह रहा हूँ कि तुम्हारे दान से दूसरों को राहत मिले और तुम कमी झेलते बैठो। 14इस समय तुम्हारी अधिकता (समृद्धि) से उन लोगों की ज़रूरतें पूरी होती हैं, ताकि भविष्य में उन लोगों की अधिकता (समृद्धि) से तुम्हारी ज़रूरतें पूरी हो सकें और बराबरी हो जाए। 15जैसा कि लिखा है, जिसने ज़्यादा बटोरा (जमा किया) उसके पास बहुत ज़्यादा नहीं बचा। जिसने कम बटोरा, उसके लिए उतना ही काफ़ी था (या कमी नहीं हुयी)।

16मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि जिस तरह से तुम्हारे लिए मुझे चिन्ता है, ठीक उसी तरह तीतुस को भी है। 17उसने हमारी यह बिनती (सलाह) मान ली कि वह तुम लोगों से मिलेगा। सच्चाई तो यह है कि वह खुद तुम लोगों से मिलने को लालायित था। 18सुसमाचार सुनाने के सम्बन्ध में सभी कलीसियाओं में बहुचर्चित भाई को हम उसके साथ भेज रहे हैं। 19भेंट पहुँचाए जाने के लिए की गयी यात्रा पर जाने के लिए, उसे चर्च ने नियुक्त किया - एक सेवा जो प्रभु की महिमा करती है और हमारी मदद करने की लालसा को दिखाती है। 20ऐसा हम ने इसलिए किया ताकि स्वेच्छा-दान को लोगों तक पहुँचाने में सावधानी बरती जाए और कोई हमारे ऊपर ऊँगली न उठा सके। 21इसलिए कि हमें इस बात की चिन्ता है कि वही किया जाए जो न केवल प्रभु की दृष्टि में सही है। लेकिन मनुष्यों की दृष्टि में भी।

22हम ने उसके साथ अपने भाई को भी भेजा है जिसे बार-बार जाँचा गया और बहुत सी बातों में जोशीला है। अभी तुम्हारे ऊपर उसको बड़ा भरोसा होने की वजह से उसका जोश भी बढ़ गया है। 23यदि कोई तीतुस के बारे में पूछे तो वह मेरा साथी और तुम लोगों के लिए मेरा सहकर्मी है। यदि सवाल दूसरे भाइयों का है, तो वे मण्डलियों (चर्चों) के भेजे हुए मसीह को आदर देने वाले हैं। 24इसलिए अपना प्यार और हमारा वह घमण्ड जो तुम्हारे बारे में

8:12 "ग्रहण योग्य"- पद 12 - मरकुस 12:41-44.
8:13-15 यहाँ 'समान' शब्द 'मुख्य' या 'विशेष' है। विश्वासियों में आपस में प्रेम होना चाहिए। आवश्यकता में पड़े व्यक्ति के लिए तत्परता। प्रे.काम 2:44-45; 4:32-35 से तुलना करें। देखें 1 यूहन्ना 3:16-18. प्रभु यीशु इसका सब से बड़े उदाहरण हैं। जो कुछ उनके पास है, उसको वह विश्वासियों के साथ बाँटते हैं। जो कुछ विश्वासियों के पास है, उसे वे मसीह और विश्वासियों के साथ क्यों नहीं बाँटते है? जब कि वे सभी मसीह में एक हैं, उन में से कुछ अत्याधिक अमीर और कुछ अत्याधिक गरीब क्यों हैं? जब कि कुछ लोगों के पास जीवन की आधारभूत चीजें नहीं हैं, कुछ लोग क्यों अपना धन आमोद-प्रमोद की वस्तुओं में फ़ेंक देते हैं? जब इस्राएल के लोग मरूस्थल में थे, परमेश्वर ने ऐसा किया कि सब लोगों में समानता थी (पद 15; निर्ग. 16:18)। परमेश्वर विश्वासियों को अच्छी वस्तुएँ देते हैं, ताकि उनके पास काफ़ी हो - इसलिए नहीं कि कुछ लोग मज़ा करें और दूसरे तकलीफ़ में रहें। लेकिन इस सम्बन्ध में कोई आज्ञा नहीं है। यह प्रेम की बात है। देने के लिए ज़ोर नहीं डाला जाना चाहिए। किसी भी व्यक्ति की सम्पत्ति उसकी होती है। वह दे या रखे रहे, उसी पर निर्भर है। यदि वह अधिक रख लेता है, थोड़ा देता है, तो वही हानि उठाएगा, और दूसरों की हानि भी होगी। यदि वह दयालु होता है तो दूसरों की मदद कर सकता है।
8:18 "भाई"- हमें यह नहीं मालूम कि यह और पद 22 के भाई कौन थे।
8:19 1 कुरि. 16:3-4.
8:20-21 12:16-18; 1 कुरि. 16:3 देखें। यहाँ इस बात का अच्छा उदाहरण है कि परमेश्वर के कार्य के लिए धन कैसे इस्तेमाल किया जाना चाहिए। जिस तरह से पौलुस ने यह सब सिखाने में दुःख उठाया, यीशु के लोगों को भी ऐसा करना चाहिए। उन्हें यह जानना चाहिए कि चाहे लोग देखें या नहीं, प्रभु सब कुछ देखते हैं इब्रा. 4:13.
8:23 "मसीह को आदर देने वाले"- यूहन्ना 17:10 से तुलना करें।

है, उसको मण्डलियों (चर्चों) के सामने सबूत के साथ दिखाओ।

9 मेरे लिए तुमको पवित्र लोगों की इस सेवा के बारे में लिखना ज़रूरी नहीं है। 2क्योंकि मदद करने की तुम्हारी लालसा (चाहत) को मैं पहले ही से जानता हूँ। मैं मकिदुनिया के सभी चर्च (कलीसियाओं) में तुम्हारी तारीफ़ करता रहा हूँ कि एक साल पहले ही तुम यूनान (अखाया) के लोग दान देने के लिए तैयार थे। सच पूछा जाए तो तुम्हारे जोश ने बहुत से विश्वासियों को दान देने के लिए प्रोत्साहित किया। 3लेकिन मैं इन भाइयों को भेज रहा हूँ ताकि इस बारे में तुम्हारे लिए हमारा आनन्द बेकार न ठहरे। जैसा मैंने उन से कहा है, वैसे ही तुम तैयार रहो। 4इसलिए कि यदि कोई मकिदुनी मेरे साथ आने पर तुम्हें तैयार न पाए, तब हमें तुम्हारे ऊपर किए गए विश्वास के कारण शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। 5इसलिए मैंने यह ज़रूरी समझा है, कि ये भाई पहले ही से तुम्हारे पास आएँ। और तुम्हारे प्रतिज्ञा किए हुए स्वेच्छित दान (या उदारता के फल) पहले ही से इकट्ठा कर लें।

6जो इन्सान बड़ी मात्रा (बड़े पैमाने) में बोता है, वह बड़ी मात्रा में काटेगा। जो उदारता (बड़े मन) से बोता है, वह ज़्यादा काटेगा भी। 7हर एक जन जैसा मन में इरादा करता है, उसी तरह से दान दे, न ही कुढ़-कुढ़ के, न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर प्रसन्नता से देने वाले से प्रेम करते हैं। 8परमेश्वर सब तरह का अनुग्रह तुम्हें भरपूरी से दे सकते है। तब हर समय, सब कुछ जो तुम्हारी ज़रूरत है, पूरी होगी और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास

8:24 "घमण्ड जो तुम्हारे बारे में है"- 7:14 जिन लोगों को और जिन लोगों के बीच, पौलुस ने भेजा, उनके लिए पौलुस के प्रेम और चिन्ता को देखें (11:28)।

"उसको...सबूत"- पद 8, 1 यूहन्ना 3:17 से तुलना करें। यदि हम मसीह को और उसके कार्य के लिए नहीं देते हैं तो हमारे प्रेम का सबूत क्या होगा? यदि हम मसीह से प्यार करते हैं, हम उनके कार्य और उनके लोगों से प्रेम करेंगे और उनकी मदद करना चाहेंगे।

9:1-2 देखें 8:6-7,10,11.

9:3-4 देखें 8:13,22,24 ऐसा लगता है कि कुरिन्थ में रहने वाले मसीहियों ने भेंट देने में दिलचस्पी ली थी, लेकिन बाद में धन इकट्ठा करने में उन्हों ने लापरवाही दिखाई (8:10-11)। दुःख की बात है, कि आज भी ऐसे मसीही हैं। आरम्भ में वे जोश दिखाते हैं, किन्तु बाद में समय बीतने पर ठण्डे हो जाते हैं और कार्य को पूरा नहीं करते। यह मज़बूत न होने और अस्थिर होने का सबूत है।

9:5 जहाँ तक देने का सवाल है, विश्वासियों को अपने लिए इतना अधिक रखना नहीं चाहिए, जितना वे चाहते हैं। इसलिए नहीं देना चाहिए क्योंकि उन से आशा की जाती है या वे देने से बच नहीं सकते।

9:6 नीति. 11:24-25; 19:17; 22:8-9; लूका 6:38; गल. 6:7 से तुलना करें। इस सिद्धान्त पर ध्यान दें। कुछ लोग गरीब हैं और रहेंगे भी, आर्थिक और आत्मिक रीति से। इसलिए कि वे परमेश्वर को और दूसरों को देना नहीं चाहते।

9:7 पद 5; 8:8 यदि हमारी भेंट से परमेश्वर को खुश करना है तो इसे मन से होना है। आनन्द से देना है, शोक करते हुए नहीं। यदि हमारे पास प्रेम है, तो देना हमारे लिए साँस लेने के समान होगा।

9:8 जो लोग मन से खुशी से दूसरों को देते हैं, वे कभी नुकसान नहीं उठाएँगे। सच्चाई तो इसके विपरीत है - नीति. 11:24-25. परमेश्वर दुनिया के शासक हैं। मनुष्य की योजनाएँ, लक्ष्य, भूमि, मौसम, अर्थव्यवस्था और दूसरी बातें जो आर्थिक रीति से किसी को बना सकती हैं और तोड़ सकती हैं उनके हाथों में हैं। वह उन परिस्थितियों को उन लोगों की भलाई के लिए उपयोग कर सकते हैं, जिनसे वह प्रेम करते हैं। यदि वह चाहें, उनके लिए आश्चर्यकर्म कर सकते हैं - 1 राजा 17:10-16; 2 राजा 4:1-7.

साधारणतया वह लोगों को सामान्य तरीकों से आशीष देते हैं। वह लोगों और परिस्थितियों का इस्तेमाल उनकी सम्पन्नता बढ़ाने के लिए और ऐसी मुसीबतों से रक्षा करने में जो गरीबी लाती हैं, करते हैं। वह यह जानते हैं कि अपनी दया किस प्रकार उण्डेलें ताकि वे आत्मिक और भौतिक रीति से तरक्की करें।

आशीष देने के पीछे उनका उद्देश्य यह है, ताकि उनके पास दूसरों के लिए बहुत कुछ हो। आशीषित होने पर यदि वे ऐसा रवैया नहीं रखते तो परमेश्वर उन से वे आशीषें छीन सकते हैं।

9:9-14 आनन्द से और बड़े मन से देने के परिणामों का वह वर्णन करते हैं। वे इस जीवन के साथ आने वाले जीवन में भी हैं (पद 9)।

परमेश्वर कभी उनके कामों को नहीं भूलेंगे

बहुत कुछ होगा। 9जैसा कि लिखा है,
"उसने बहुत दूर बिखराया, उसने गरीबों
को दिया, उसके अच्छे कामों को हमेशा
तक याद किया जाएगा।

10इसलिए परमेश्वर जो बोने वाले को
बीज और खाने के लिए रोटी देते हैं, तुम्हे
बीज मुहैया कराने के साथ उसे कई गुना
बढ़ाएँगे। और तुम में उदारता की बड़ी
फ़सल (धार्मिकता की फ़सल) पैदा करेंगे।
11तुम हर तरह से भरपूर किए जाओगे,
ताकि हर मौके पर उदार बन सको और जब
हम तुम्हारे दान को ज़रूरतमंद लोगों तक
पहुँचाए, तो वे परमेश्वर को धन्यवाद दें।

12क्योंकि इस आर्थिक सहायता का काम
(सेवा) पवित्र लोगों की मात्र ज़रूरतों ही को
पूरा नहीं करती हैं, लेकिन आनन्द के साथ
परमेश्वर को बहुत धन्यवाद दिया जाना भी
होता है। 13इस सेवा का नतीजा यह होगा कि
लोग परमेश्वर की बड़ाई करेंगे। इसलिए
कि सभी विश्वासियों के लिए तुम्हारी
उदारता यह साबित करेगी कि तुम मसीह
के सुसमाचार को अपनाकर उसके आधीन
रहते हो और उनको (गरीब विश्वासियों)
तथा सब के लिए उदारता से दान देते हो।
14वे लोग तुम्हें अपनी प्रार्थनाओं में याद करते
हैं, इसलिए कि तुम पर परमेश्वर का बड़ा ही
अनुग्रह है, तुम्हारी लालसा करते रहते हैं।

15जिस दान (अनुग्रह) की बड़ाई शब्दों में
नहीं की जा सकती, उसके लिए परमेश्वर
का धन्यवाद हो।

(पद 9, इब्रा. 6:10 से तुलना करें)।

परमेश्वर उन्हें भौतिक रीति से आशीष देंगे (पद 10,11) उनके द्वारा परमेश्वर के लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होंगी (पद 12)। वे मसीह के सुसमाचार के प्रति आज्ञाकारिता का सबूत देंगे (पद 13)। अपनी प्रार्थनाओं में दूसरे लोग बड़े प्रेम से याद करेंगे (पद 14) उनके कारण परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति मिलेगी (11,12,13)।

यह तीसरा परिणाम, जिसे तीन बार दोहराया गया है पौलुस के लिए सब से अधिक महत्वपूर्ण था। 1:11; और 4:15 भी देखें। प्रत्येक बात में परमेश्वर को इज़्ज़त मिलना उसका सब से बड़ा लक्ष्य था (1 कुरि. 10:31)। परमेश्वर को आदर तब मिलता है, जब उनके लोग वैसा जीवन जीते हैं, जैसा जीना चाहिए, वैसी स्तुति करते हैं जैसी करनी चाहिए।

9:10-11 पद 8 कहता है, कि परमेश्वर ऐसा कर सकते हैं। पौलुस कहता है, कि यदि वे खुश रहेंगे, दिल से देंगे, परमेश्वर आशीष देंगे। 1 तीमु. 6:6-8 के आधार पर हमें स्वार्थ के लिए धनी नहीं होना है। यदि हम सम्पन्नता की कामना करते हैं तो इसलिए कि हम परमेश्वर और उनके लोगों के लिए अधिक कर सकें।

9:13 उनके दिल खोल कर देने से उनका प्रेम और आज्ञाकारिता दिखायी दी। न देना इसके विपरीत की स्थिति दिखाता है।

9:15 मनुष्य के लिए परमेश्वर के दान अनेक और बड़े हैं (भजन 68:35; 127:2-3; 146:7; भजन 2:6; मत्ती 7:11; यूहन्ना 14:27; प्रे.काम 5:31; 14:17; 15:8; 17:25; रोमि. 5:17; 6:23; 1 कुरि. 7:7; 12:7-11; इफ़ि. 2:8; फ़िलि. 1:29; 2 तीमु. 3:16; याकूब 1:5,17)। इस में संदेह नहीं कि यहाँ पर पौलुस के मन में सब से बड़ा और अवर्णनीय दान था यूहन्ना 3:16; रोमि. 8:32; यशा. 9:6. वह इस वरदान की ओर इशारा करता है, ताकि विश्वासी समझ सकें कि देना क्या है और जैसे परमेश्वर देते हैं, देना सीखें। यहाँ विश्वासियों के देने के सम्बन्ध में सत्य के बारे में संक्षेप में लिखा है। देना, परमेश्वर का दान है, जो उनके मन और जीवन में परमेश्वर की दया के कारण है (8:1; रोमि. 12:6-8)। देना एक अच्छा अवसर है जिसे विश्वासियों को चाहना है (8:4)।

"देना हमारी आज्ञाकारिता और प्रेम की परीक्षा है" - न देना दिखाता है, प्रेम नहीं है। थोड़ा देना, थोड़ा प्रेम दिखाता है। अधिक देना अधिक प्रेम दिखाता है (8:8)।

देना परमेश्वर का स्वभाव है (8:9)।

यदि मन ठीक है, छोटे दान भी परमेश्वर को ग्रहणयोग्य हैं (8:12; मरकुस 12:41-44)। देने से जिन लोगों के पास बहुत है और जो आवश्यकता में हैं, उनके बीच की खाई पट जाती है (8:13)।

देना परमेश्वर के लोगों की सेवा है (9:1)।

देना, आज़ादी और खुशी से होना चाहिए (9:5,7)।

देने के बदले में प्रतिफल है (9:6,8-11,14)।

देने से परमेश्वर को धन्यवाद और स्तुति मिलती है (9:11-13)।

दूसरों और परमेश्वर को देने के सम्बन्ध में कुछ और पद हैं - निर्ग. 35:5-9; लैव्य. 7:12-13; 27:30; गिनती 18:21,24; व्यव. 14:28-29; 15:10; 2 शमू. 24:24; 1 इति. 29:3,5,9,14; भजन 37:26; नीति. 11:24-25; 19:17; 22:9; सभो. 11:1-2; मला. 1:7-8,14; 3:8-10; मत्ती 6:1-2,19,20; 19:21; लूका 6:38; प्रे.काम 20:35; रोमि. 12:13; 1 तीमु. 6:18-19; इब्रा. 6:10; याकूब 2:15-16; 1 यूहन्ना 3:17.

10 यीशु मसीह की सी नम्रता और दीनता से मैं तुम लोगों से बिनती करता हूँ - हालाँकि तुम्हारा यह भ्रम है कि व्यक्तिगत रीति से मैं डरपोक हूँ, लेकिन लिखी हुयी चिट्ठी से बहुत निडर दिखता हूँ। 2ठीक है, तुम में से जो लोग सोचते हैं कि हम सांसारिक तौर-तरीके के अनुसार जीते हैं, उन से मेरी बिनती है कि वे झूठे कठोर तरीके से पेश आने पर मजबूर न करें। 3क्योंकि हालांकि हम इन्सान (देह में) तो हैं, लेकिन हमारी लड़ाई का तरीका दुनियावी नहीं है। 4क्योंकि हमारी लड़ाई

10:1 देखें 11:10. 10-13 अध्याय में पौलुस लोगों का ध्यान कुरिन्थ में झूठे शिक्षकों की ओर और जो उनकी सुनते हैं, उनकी ओर लगाता है। ये झूठे शिक्षक बिगड़ा हुआ संदेश देते थे (11:4)। वे शैतान के सेवक थे, जिन्हें शैतान ने कुरिन्थ में भेजा था ताकि विश्वासियों को गुमराह करें (11:13-14)। वे घमण्ड करते थे कि वे सच्चे प्रेरित हैं (11:5,12)। उन्हों ने पौलुस और उसके संदेश पर हमला किया। पौलुस इस सत्य का बचाव करता है कि वह प्रेरित है। यह उसके खुद के लिए नहीं, किन्तु कुरिन्थ में कलीसिया की खातिर था (12:19)। उसे उनकी आत्मिक दशा की चिन्ता थी 11:3; 12:20-21. उसने महसूस किया था कि यदि वे उसे अस्वीकार करें और यह कि परमेश्वर उसके (चुने हुए) द्वारा बोलें, तो स्थिति गंभीर हो जाएगी।

"मसीह...दीनता"- मत्ती 11:29; 12:20; यशा. 40:11. यीशु मसीह की तरह पौलुस ने व्यवहार किया था, एक प्रेरित के अधिकार का उपयोग कर के नहीं (13:10) वह प्रेम से बिनती करता है।

"निडर"- कुछ लोग कुरिन्थ में पौलुस पर कायर होने का दोष लगा रहे थे। यह भी कि वह बड़े साहस की भाषा में खत लिखता था।

10:2 पौलुस साहस से, कठोर तरीकों का इस्तेमाल कुरिन्थ में कर सका। उसने आशा की, कि वे उस पर ऐसा करने के लिए ज़ोर नहीं डालेंगे।

"सांसारिक...अनुसार"- लोगों द्वारा लगाया गया, यह भी एक झूठा दोष था।

10:3-5 पौलुस सत्य और त्रुटि के बीच के युद्ध की ओर इशारा करता है। इसका मतलब परमेश्वर द्वारा प्रगट किया गया सत्य और लोगों की गलतियाँ। दुनिया का लक्ष्य है, मसीह के सत्य का नाश करना। परमेश्वर के सच्चे सेवकों का कार्य है झूठ को नाश कर के मनुष्यों के विचारों को मसीह की आज्ञाकारिता में लाना।

मसीह के सेवकों के हथियार संसार के हथियारों या अस्त्रों से भिन्न हैं। विश्वासी इस दुनिया में हैं किन्तु झूठ से लड़ने के लिए उन्हों ने दुनियावी अस्त्रों का उपयोग नहीं करना है। दुनियावी हथियार हिंसा, बल, चालाकी, जादू टोना और तर्क आदि हैं जो पापी मनुष्य के मन की उपज है। विश्वासियों के पास भी हथियार हैं (6:7; इफ़ि. 6:17)। किन्तु वे आत्मिक हैं। सत्य और धार्मिकता के साथ कार्य करने वाली परमेश्वर की सामर्थ पर पौलुस निर्भर करता था। परमेश्वर के आत्मा की भरपूरी, ईमानदारी, प्रेम में सत्य बोलना उस परमेश्वर के महान् सैनिक के हथियार थे।

ऐसे हथियारों में ईश्वरीय ताकत है। उनके द्वारा वह शैतान की दुष्टता और अविश्वास के किलों को गिराना चाहता था। वह धर्म के गढ़ों, दर्शन, परमेश्वर के सच्चाई के विरोध के तर्क, झूठ-मूठ का ज्ञान और सामर्थ को तोड़ना चाहता था। इस दुनिया में चलने वाला महायुद्ध, सत्य और झूठ के बीच है। पौलुस मनुष्यों के ज्ञान, विचार, प्रत्येक धार्मिक विचार को मसीह के पैर के नीचे और उसके द्वारा परखे जाने के लिए लाया। सिखाए हुए सत्य के अनुरूप और परमेश्वर के बेटे की आधीनता में वह अपने मन और विचारों को लाया। वह चाहता था कि लोगों की सोचने की प्रक्रिया भी उन्हीं के आधीन हो। हम निश्चित हो सकते हैं कि जो 'मन' मसीह की आज्ञा मानना चाहते हैं और 'वे विचार' जिनको मसीह स्वीकार करते हैं वही उचित हैं। मनुष्यों का मन, इच्छाएँ और कार्य पापमय और बुरे हैं (रोमि. 8:6-7; इफ़ि. 4:18)। लोगों को आज नए मन की आवश्यकता है, जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सोच सकेंगे रोमि. 12:2; इफ़ि. 4:23; फ़िलि. 2:5. मनुष्य और परमेश्वर की बुद्धि में तुलना देखें; 1 कुरि. 1:17—2:16; 3:18-20; कुल. 2:8.

के हथियार दुनिया में इस्तेमाल किए जाने वाले हथियार नहीं लेकिन किलों को (संसारिक सोच विचार के) तोड़ डालने और झूठे तर्क-वितर्क को बर्बाद करने के लिए परमेश्वर द्वारा सामर्थी हैं। 5इसलिए हम परमेश्वर के ज्ञान के विरोध में उठने वाली हर एक कल्पना और हर एक ऊँची बात का खण्डन करते हैं और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं। 6जब तुम पूरी तरह से आज्ञा मानने के लिए तैयार हो, तब हम अनाज्ञाकारिता के हर एक काम को दण्डित करने के लिए तैयार रहते हैं।

7तुम्हारी आँखें बाहरी बातों पर हैं। यदि किसी को यह भरोसा है कि वह मसीह का है तो उसे यह भी जान लेना चाहिए कि जैसा वह मसीह का है, हम भी मसीह के हैं। 8तुम्हें लग सकता है कि प्रभु द्वारा दिए गए अधिकार के बारे में हम ज़्यादा घमण्ड कर रहे हैं। लेकिन हमारा अधिकार तुम्हारी तरक्की के लिए है न कि नुकसान के लिए। इसलिए मैं अपने अधिकार के इस्तेमाल के बारे में शर्मिन्दा न होऊँगा। 9अपनी चिट्ठियों से मैं तुम्हें डरा नहीं रहा हूँ। 10क्योंकि कुछ कहते हैं, "उसकी चिट्ठियों में वह वज़नदार और ताकतवर दिखता है लेकिन उसके बोलने में कोई दम नहीं है। ऐसे व्यक्ति को यह जान लेना चाहिए कि जब हम आएँगे, तब उतनी ही प्रभावशाली रीति से बातें करेंगे, जैसा हम अपनी चिट्ठियों में लिखते हैं। 11जो ऐसा समझता है, वह यह जान रखे कि जैसे पीठ पीछे चिट्ठियों में हमारे वचन हैं, वैसे ही तुम्हारे सामने हमारे काम होंगे।

12क्योंकि हमें यह हिम्मत नहीं है कि हम अपने आपको उन में से ऐसे कुछ के साथ गिनें या अपनी तुलना उन से करें जो अपनी बड़ाई खुद करते हैं और अपने आपको आपस में नाप-तौलकर एक दूसरे से तुलना करके बेवकूफ़ ठहरते हैं। 13हम सीमा से बाहर बिल्कुल घमण्ड नहीं करेंगे, लेकिन उसी सीमा तक जो परमेश्वर ने हमारे लिए ठहरायी है। इस सीमा में तुम भी शामिल हो और उसी के अनुसार घमण्ड भी करेंगे। 14क्योंकि हम अपनी सरहद (सीमा) से बाहर अपने आपको बढ़ाना नहीं चाहते जैसे कि तुम तक न पहुँचने की हालत में होता, वरन मसीह का सुसमाचार सुनाते हुए तुम तक पहुँच चुके हैं। 15हम सीमा से बाहर आवश्यकता से अधिक दूसरों की मेहनत पर घमण्ड नहीं करते, लेकिन हमें उम्मीद है कि जैसे-जैसे तुम्हारा विश्वास

10:6 पौलुस उन्हें मौका देना चाहता था ताकि वे सत्य के प्रति आज्ञाकारी हों। अन्त में वे पाएँगे कि उसे यह अधिकार है कि अनाज्ञाकारिता को दण्डित करें। तुलना करें 13:10; 1 कुरि. 4:21; 5:3-5.

10:7 पद 12; 5:12

10:8 "घमण्ड"- 1:12 में नोट्स देखें।

10:10 पद 1. ऐसा लगता है कि लोगों ने यह सोचा कि पौलुस अच्छा वक्ता नहीं था और ज्ञान भी कम था (11:6)। यह भी कि सच्चाई सामने रखने में नम्र और दीन था। जब उन्हों ने कहा कि उसके पत्र "भारी और सामर्थी" हैं, तो यह सत्य था।

10:12 यदि लोग दूसरों से अपनी तुलना करें तो उसमें पूरी ईमानदारी नहीं होती है। वे अपनी बड़ाई की ही बात देखेंगे। किन्तु पौलुस ने यह खेल नहीं खेलना चाहा। वह जानता था कि तुलना के लिए एक और ऊँचा स्तर है। मसीह हमारे लिए नमूना हैं, यदि उन से हम तुलना करें तो कोई भी अपने आप को ऊँचा नहीं समझेगा।

10:13 "सीमा"- यह प्रेरित, सुसमाचार देने वाले और शिक्षक की सेवा के बारे में कहा जा रहा है। उसकी सेवा की सीमा कुरिन्थ तक पहुँची थी। वह प्रथम था जो सुसमाचार के साथ वहाँ गया, कलीसिया स्थापित की (1 कुरि. 4:14-15; 9:2)।

"घमण्ड"- 1:12.

10:15 झूठे प्रेरित (पद 13) जो कुरिन्थ आए थे वे चर्च को लेकर उसे अपना कहना चाहते थे। ऐसा झूठे शिक्षकों के साथ होता है। कुरिन्थ में अपने कार्य के सम्बन्ध में पौलुस घमण्ड नहीं कर रहा था।

बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे हम अपनी सीमा के अनुसार तुम्हारी वजह से और भी बढ़ते जाएँगे। 16ताकि हम तुम्हारे पड़ोस के इलाकों तक सुसमाचार ले जा सकें और दूसरों के क्षेत्र में किए गए काम पर गर्व न करें। 17लेकिन जो गर्व करे, तो प्रभु पर करे। 18क्योंकि जो अपनी बड़ाई करता है वह नहीं, लेकिन जिसकी बड़ाई प्रभु करते हैं, वही स्वीकार किया जाता है।

11 मैं चाहता था कि तुम मेरी थोड़ी-सी मूर्खता में धीरज रखते, हाँ वैसे तो तुम मेरे साथ धीरजवन्त हो। 2इसलिए कि मैं परमेश्वर की सी जलन तुम्हारे लिए रखता हूँ, मैंने एक पवित्र दुल्हन की तरह तुम्हारी बात यीशु से की है ताकि तुम्हें पवित्र कुवाँरी की तरह मसीह को सौंप दूँ। 3लेकिन इस बात का मुझे डर है कि जिस तरह से साँप ने हव्वा को छला था, तुम्हारे मन मसीह के प्रति शुद्ध और निष्कपट समर्पण से दूर न हो जाएँ। 4यदि कोई आकर तुम्हें प्रचार किए गए यीशु मसीह के अलावा किसी और यीशु के बारे में सिखाए या तुम्हें कोई और आत्मा मिले जो पहले नहीं मिला था या तुम्हारे द्वारा अपनाए गए सुसमाचार से भिन्न सुसमाचार सुनाए, तो तुम उसे बड़ी आसानी से स्वागत करने हो लेते हो 5बड़े से बड़े प्रेरितों से मैं अपने आपको कम नहीं समझता हूँ। 6मैं हालांकि संदेश देने में निपुण नहीं हूँ, फिर भी मैं ज्ञान में कम नहीं हूँ। हर तरह से सभी बातों में हम ने यह साफ़ साफ़ बता दिया है।

10:16 पौलुस ने आशा की थी कि कलीसिया इतनी मजबूत हो जाएगी कि वह अपना समय और बल दूसरे स्थानों में जाने के लिए उपयोग करेगा। रोमि. 15:20-22 से तुलना करें।

10:17 यिर्म. 9:24; 1 कुरि. 1:31.

10:18 पद 12. झूठे शिक्षक अपनी वाह-वाह के साथ-साथ दूसरों से प्रशंसा चाहते थे (3:1)। यूहन्ना 5:44 से तुलना करें। पौलुस वह प्रशंसा चाहता था जो केवल परमेश्वर से मिलती है (1 कुरि. 4:3-5; गल. 1:10; 1 थिस्स. 2:4)।

11:2 "जलन"- वह आत्मिक विषय पर बात कर रहा है। कुछ लोग कुरिन्थ में, झूठे शिक्षकों की बात सुन रहे थे। उसे डर था कि वे सिखाए गए सत्य को छोड़ देंगे। 'धुन' शब्द उस प्रेम को दिखाता है जो उसके मन में उनके प्रति था। उन मसीहियों को अपने लिए नहीं रखना माँगता था, न ही अपनी प्रशंसा के लिए। मसीह के साथ उनका जो सम्बन्ध था, उसके प्रति उसको चिन्ता थी।

"दुल्हन"- मत्ती 22:1-2; यूहन्ना 3:29; रोमि. 7:1-4; इफ़ि. 5:24-33; प्रका. 19:6-9 तुलना करें भजन 45:9-15; यशा. 54:5; यिर्म. 3:14,20; होशे 2:16,19.

11:3 उत्पत्ति 3:1-7 । यह सही है कि पौलुस आदम नहीं किन्तु हव्वा की बात करता है क्योंकि हव्वा प्रथम आदम की दुल्हन थी और कलीसिया आखिरी आदम की दुल्हन (1 कुरि. 15:45)। हव्वा ने धोखा खाया, आदम ने नहीं (1 तीमु. 2:14)। कुरिन्थ में विश्वासी जिन बातों का सामना कर रहे थे वह शैतानी धोखा था (पद 13-15)।

11:4-5 पौलुस उन कारणों को देता है जिनकी वजह से वह वहाँ के कुछ मसीहियों से डरा हुआ था। उनके पास सच्चाई के लिए प्रेम की कमी थी और गलती को पहचानने की योग्यता भी। वे झूठे शिक्षकों की खिलाफ़त में खड़े होने की दशा में नहीं थे।

वे उनको इतना सह रहे थे, कि पौलुस को भी आश्चर्य हो रहा था। वह जानता था कि झूठे शिक्षकों को सहना सत्य के प्रति प्रेम की कमी को दिखाता है। प्रत्येक धार्मिक शिक्षक जिसके पास, एक या दूसरी तरह की आत्मा है, एक तरह की सामर्थ है या दूसरे तरह की, परमेश्वर की आत्मा या सामर्थ नहीं है। प्रत्येक जो सुसमाचार दे रहा है, मसीह का सत्य सुसमाचार नहीं दे रहा है (गल. 1:6-9; 1 यूहन्ना 4:1)। उन प्रेरित कहलाने वालों को मज़ाक से वह 'सुपर प्रेरित' कहता है, क्योंकि वे बड़े-बड़े दावे कर रहे थे।

11:6 "संदेश देने में"- 10:10; 1 कुरि. 2:1-5.

"ज्ञान में"- 1 कुरि. 2:6-16; गल. 1:11-12.

7वापस बिना कुछ अपेक्षा किए दीनता से
सुसमाचार सुनाकर तुम्हें ऊपर उठाकर क्या
मैंने गुनाह कर दिया? 8दूसरी कलीसियाओं
(मण्डलियों या चर्चों) से आर्थिक मदद
लेकर मैंने तुम्हारी सेवा की। 9तुम्हारे साथ
रहते हुए जब मैं आवश्यकता में था, तब
किसी पर भार न बना, क्योंकि मकिदुनिया
से आए हुए भाइयों ने मेरी ज़रूरत को पूरा
किया था। मैं न तुम्हारे ऊपर बोझ बना
था और न ही बनूँगा। 10यदि मसीह की
सच्चाई मुझ में है, तो अखाया देश में कोई
मुझे इस घमण्ड से न रोकेगा। 11क्यों?
क्या इसलिए कि मैं तुम लोगों से प्रेम नहीं
करता? परमेश्वर को मालूम है कि मैं प्रेम
करता हूँ। 12मैं जो कर रहा हूँ, करता रहूँगा,
ताकि मैं हर एक ऐसे अवसर को खत्म कर
सकूँ, जो वे लोग अपने घमण्ड की बातों
में हमारे समान होने का दावा करते हैं।
13इसलिए कि ऐसे लोग झूठे प्रेरित,
धोखेबाज़ कार्यकर्ता हैं, जो मसीह के

11:7-12 1 कुरि. 9:4-15 देखें। शायद उसके शत्रुओं ने कहा था, कि पौलुस ने वहाँ की कलीसिया से किसी प्रकार का सहयोग नहीं लिया, क्योंकि वह जानता था कि वह सच्चा प्रेरित नहीं है और सहायता के योग्य भी नहीं। यह भी कि अपनी जीविका (प्रे.काम 18:3) के लिए अपने हाथों से कार्य करना एक सच्चे प्रेरित की इज़्ज़त के लिए ठीक नहीं था। किन्तु पौलुस कहता है कि वह उन से प्रेम करता है (पद 11)। वह उनकी तरक्की देखना चाहता है (पद 7)।

11:8 "लेकर"- पौलुस ने वास्तव में ऐसा नहीं किया था। उसने दूसरी कलीसियाओं से आर्थिक सहायता माँगी नहीं थी।

जब उन्हों ने सहायता करनी चाही, उसने मना भी नहीं किया। कभी-कभी मदद करने वाले खुद निर्धन थे। उसको ऐसा लगा कि निर्धन मसीहियों से आर्थिक मदद प्राप्त कर के, धनी मसीहियों की सेवा करना, निर्धन मसीहियों को लूटने के समान था (8:14)।

11:9 कभी-कभी पौलुस ने विश्वासियों से आर्थिक मदद प्राप्त की थी। किन्तु ऐसा लगता है कि जब कभी वह किसी कलीसिया में उपस्थित होकर सेवा करता था, उसने आर्थिक सहयोग नहीं लिया।

11:10 1 कुरि. 9:15-18.

11:12 इस में कोई सन्देह नहीं, कुरिन्थ में झूठे प्रेरित मसीहियों से संदेश देने के पैसे लेते थे (2:17)। वे यह सोचना चाहते थे, कि वे पौलुस के समान हैं, किन्तु पौलुस दिखाता है कि मुफ़्त में संदेश सुनाने में वे उसके बराबर नहीं थे। उसने यह निर्णय भी किया, कि वह उनको यह दिखा देगा।

11:13-15 परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से पौलुस कुरिन्थ के झूठे धार्मिक शिक्षकों की पोलपट्टी खोलता है। मसीह के नाम से आने वाले हर युग के हर स्थान के ऐसे लोगों की भी। वह उनके बारे में छः बातें बताता है।

वे "झूठे" हैं - वे कहते हैं, कि परमेश्वर ने उन्हें भेजा है, किन्तु ऐसा नहीं है (प्रका. 2:2; यिर्म. 23:21) से तुलना करें।

वे "धोखा देने वाले कार्यकर्ता" हैं - उनके तरीके और संदेश, धोखाधड़ी के हैं और उनका उद्देश्य है दूसरों को ठगना (मत्ती 24:11,24; रोमि. 16:18; 2 थिस्स. 2:9-10)।

वे बाहर से कुछ और दिखते हैं। वे इस तरह का दिखावा करते हैं कि मसीह ने उन्हें भेजा है। किन्तु उनके दुष्ट मन बदले नहीं है।

वे शैतान के सेवक हैं (पद 15; यूहन्ना 8:44; 2 थिस्स. 2:9; 1 तीमु. 4:1-2)। वे मसीह के सेवक होने का ढोंग करते हैं

- वे नैतिकता की बातें कहते हैं, किन्तु वे सच में बुराई के सेवक हैं (2 पतर. 2:18-19. 2 पत. का दूसरा अध्याय और यहूदा का पत्र झूठे मज़हबी शिक्षकों के विषय में ही बताता है)।

उनके कामों के आधार पर परमेश्वर उनका न्याय करेंगे (2 थिस्स. 2:8; 2 पतर. 2:3,9; यहूदा 13; मत्ती 6:22-23)।

कुछ कुरिन्थ के विश्वासी ऐसे लोगों की बातें सुन रहे थे। वे उनको धन मुहैया करा रहे थे। वे उनकी शिक्षा को सह रहे थे।

क्या हम पौलुस की चेतावनी समझ नहीं सकते हैं? क्या ऐसा हो सकता है कि लोग शैतान के सेवकों का स्वागत करें और उनके जीवन में नुकसान न हो? क्या ऐसा करने वालों के आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सन्देह नहीं उठेगा?

प्रेरितों का रूप धारण करते हैं। 14इस
में कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि शैतान खुद
ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का सा रूप ले लेता है।
15इसलिए इस में कोई बड़ी बात नहीं कि
उसके (शैतान के) सेवक मसीह के सेवकों
का रूप धारण करें। अन्त में उन्हें उनके
बुरे कामों की सज़ा जो मिलनी चाहिए,
ज़रूर मिलेगी।

16मैं फिर कहना चाहूँगा कि कोई यह
न समझे कि मैं बेवकूफ़ हूँ। लेकिन अगर
समझता है, तो कम से कम मुझे बेवकूफ़
समझकर अपना ले, ताकि मैं भी थोड़ा बहुत
घमण्ड कर सकूँ। 17ऐसा गर्व प्रभु की आज्ञा
से नहीं है, लेकिन मैं एक मूर्ख की तरह कह
रहा हूँ। 18इसलिए बहुत से लोग सांसारिक,
शारीरिक, या जिस भी तरह से गर्व करते
हैं, मैं भी करूँगा। 19इसलिए कि तुम इतने
अक्लमन्द हो, तुम बेवकूफ़ों को सह लेते
हो। 20यदि तुम्हें कोई गुलाम बना लेता है,
शोषण करता है, या फँसा लेता है या अपने
आप को बड़ा बनाता है या चपत लगाता
है, तो तुम सह लेते हो। 21मुझे यह कहते
हुए शर्म आती है कि ऐसा करने में हम बहुत
कमज़ोर थे। लेकिन जो कोई भी किसी तरह
का घमण्ड करने की हिम्मत करे, मैं भी उस
बात के लिए घमण्ड कर सकता हूँ।

22क्या वे इब्री हैं? मैं भी हूँ। क्या वे
इस्त्राएली हैं? मैं भी हूँ। क्या वे अब्राहम
के वंश के हैं? मैं भी हूँ। 23क्या वे मसीह
के सेवक हैं? - मैं पागल की तरह कह

11:14 शैतान अपने आप को शैतान के रूप में प्रगट नहीं करता है। वह पाप दुष्टता और बुराई दिखने भी नहीं देता है। वह अपने आप को चमकता हुआ, बुद्धि से भरा और खूबसूरत दिखाता है। वह एक ईश्वर के रूप में आता है। वह परमेश्वर के वचन के इन्कार किए जाने को ऐसा रखता है, कि वह सही लगता है। वह बुराई को अच्छाई के स्वरुप में प्रगट करता है। वह सारी दुनिया को उलट पुलट कर देना चाहता है। वह सच को झूठ के रूप में और झूठ को सत्य के रूप में लाता है। अँधेरे को प्रकाश और रोशनी को अँधियारे के समान रखता है। उसकी मदद करने के लिए बहुत से लोग हैं। ऐसे लोगों पर परमेश्वर सज़ा की घोषणा करते हैं यशा. 5:20. 1 इति. 21:1; मत्ती 4:1; यूहन्ना 8:44 में शैतान पर नोट्स देखें।

11:16-21 कहीं भी पौलुस अपनी प्रशंसा खुद नहीं करता। बिना परमेश्वर की दया और सामर्थ के वह कुछ नहीं था, यह वह जानता था - 12:11; इफ़ि. 3:8; 1 तीमु. 1:15. खुद की बड़ाई करने से वह नफ़रत करता था। इसलिए वह बेवकूफ़ लगता था। कुरिन्थ के मसीहियों की खातिर उसे अपनी प्रेरिताई के लिए बचाव करना पड़ा (12:19)। ऐसा वह तब कर सका, जब उसने बताया कि परमेश्वर ने उसे समर्थ किया कि वह यह सब करे और दुःख उठाए।

11:19,21 उनको शर्मिन्दा करने के लिए वह हास्यपूर्ण शब्दों में कहता है। वे लोग तो झूठे शिक्षकों के घमण्ड को सहते रहे थे, इसलिए उन्हें मसीह के सच्चे प्रेरित की कुछ घमण्ड की बातों को सहना ही चाहिए। झूठे शिक्षकों के कामों के बारे में हम पद 20 में पढ़ते हैं।

11:20 "गुलाम...है"- शायद इसका अर्थ यह था कि वे लोग मसीहियों को मूसा की मज़हबी किताब में लाने का प्रयत्न कर रहे थे (प्रे.काम 15:1; गल. 2:4 से तुलना करें)। किसी भी प्रकार की गलत शिक्षा के असर में होना गुलामी है।

11:21 "घमण्ड"- 1:12 के नोट्स देखें।

11:22 यह भी इस बात का प्रमाण है कि वहाँ पर झूठे भविष्यद्वक्ता यहूदी थे, जो मसीह के शिष्य होने का दावा करने के साथ-साथ पाप क्षमा के लिए मूसा की व्यवस्था के पालन पर ज़ोर डालते थे। उन्हें इस बात का घमण्ड था कि अब्राहम उनका मूल था। यह भी कि वे रूढ़िवादी समाज से थे। अपनी मूल भाषा इब्रानी में वचन पढ़ सकते थे (प्रे.काम 6:1 पर नोट्स देखे)। किन्तु पौलुस दावा करता है, कि ये सब बातें उसके पास थीं (रोमि. 11:1; फ़िलि. 3:5)।

11:23-29 वे दावा करते थे कि मसीह के सेवक हैं (पद 23)। पौलुस ने इस बात का पहले से इन्कार किया था (पद 13-15)। वह इस बात को दोहराता नहीं है। दूसरे शिक्षकों की तुलना में वह मसीह के सेवक होने के अनेक सबूत दिखाता है। सबूत तीन प्रकार के थे - मसीह के लिए उसकी मेहनत (पद 23,26,27), मसीह के लिए उसके दुःख (पद 23-27), मसीह के लोगों के

रहा हूँ। मैं उन से बढ़कर हूँ। ज़्यादा मेहनत करने में, बार-बार जेल जाने में, कोड़े खाने में, बार-बार मौत के जोखिमों में 24यहूदियों द्वारा मैंने पाँच बार उन्तालीस, उन्तालीस कोड़े खाए। 25मुझ पर तीन बार डंडे पड़े, मुझ पर एक बार पथराव किया गया, तीन बार जहाज़ टूट गए थे, एक रात मैंने समुद्र में बितायी। 26बार-बार यात्रा में, नदियों के जोखिमों में, डाकुओं के जोखिमों में, अपनी जाति वालों से जोखिमों में, अन्य जातियों से जोखिमों में, शहर के खतरों में, जंगल के खतरों में, समुन्दर के खतरों में, झूठे भाइयों से खतरों में। 27कड़ी मेहनत करने में, बिना सोए रातें काटने में, भूख-प्यास में, सर्दी में बिना कपड़ों के 28इसके अलावा प्रतिदिन सब कलीसियाओं (मसीही विश्वासियों

लिए उसके द्वारा की गयी देखरेख (पद 28,29)।

11:23 "ज़्यादा मेहनत करने में"- रोमि. 15:19; 1 कुरि. 4:12; कुल. 1:29. पौलुस इसे अपनी सूची में पहला स्थान देता है।

वह यह जानता था कि सच्चे मसीही सेवक का सबूत उसकी बातों में नहीं, लेकिन कार्यों में है। मसीह के लिए किसी के प्रेम का सबूत इस में है, कि वह उनके लिए कितना कठिन परिश्रम करने के लिए तैयार है।

"बार-बार...में"- ऐसा विश्वास किया जाता है कि पौलुस सात बार जेल में डाला गया था।

"मौत"- 1:8-9; 2:11-12.

11:24 यहूदी कानून के अनुसार कोड़े को 40 से अधिक बार नहीं मारा जाता था। व्यव. 25:1-3. साधारणतया यहूदी 39 कोड़े मारा करते थे - वे इस बात से डरते थे कि कहीं गलती से 40 के बजाए 41 न हो जाएं और व्यवस्था का उल्लंघन हो जाए, इसलिए 39 बार ही मारा करते थे। ये कोड़े मारा जाना बहुत गंभीर हुआ करता था और कभी-कभी लोग इस से मर भी जाया करते थे। मसीह के लिए किसी व्यक्ति का प्रेम इस से नापा जाता था, कि वह कितना दुःख उठाने के लिए तैयार है।

11:25 "पथराव किया गया" - प्रे.काम 14:19-20.

"जहाज़ टूट गए"- (प्रे.काम 27:27-44) में एक का वर्णन है। बहुत से वे दुःख, परेशानी, जिसमें से होकर पौलुस गया, उनका वर्णन बाईबल में नहीं हैं।

11:26 "जोखिमों में"- मसीह के लिए एक व्यक्ति क्या सहने के लिए तैयार है, उस से उसके मसीह के लिए प्रेम को मापा जा सकता है। कुरिन्थ में झूठे शिक्षक घमण्ड की बातें कह सकते थे। उन्हों ने क्या-क्या सहा था? मसीह के लिए वे कौन-कौन से खतरे झेलने के लिए तैयार थे?

11:27 "बिना...में"- अक्सर उसके पास सोने के लिए उचित स्थान नहीं होता था। अनेक दबाव और बोझ उसे नींद नहीं आने देते थे।

"भूख" "प्यास", "बिना कपड़ों के"- रोमि. 8:28,35-37. वह अनुभव की बात कर रहा था। जो क्लेश उसने सहे, उनके द्वारा उसने अपनी प्रेरिताई सिद्ध की। क्या वह अपने जीवन को और अधिक सुरक्षित और आरामदायक नहीं बना सकता था।

यदि उसने लोगों और मण्डलियों से सहायता माँग कर उपलब्ध स्थानों, होटलों और उत्तम भोज्य पदार्थों को प्राप्त किया होता। यदि वह वहीं जाता, जहाँ जाना आसान था और जहाँ लोग पहले से उसके आने का इन्तज़ाम करते थे तो उसकी ज़िन्दगी बड़े आराम और मज़े की हो सकती यी।

किन्तु वह उन सब बातों में दिलचस्पी नहीं ले रहा था (प्रे.काम 20:24)। वहाँ के लोगों तक वह पहुँचना चाहता था, जहाँ तमाम सुविधाएँ नहीं थीं। मसीह के लिए दुःख उठाना वह एक बरकत समझता था, न कि कोई बुरी बात। 4:17; रोमि. 8:17; फ़िलि. 1:29; 3:10; कुल. 1:24.

11:28 "सब कलीसियाओं"- केवल कुरिन्थ वाली ही नहीं, न वे दूसरी, जिनकी स्थापना उसने जगह-जगह की थी, वे भी जिन्हें उसने कभी देखा भी नहीं था (कुल. 2:1)। सभी कलीसियाएँ मसीह और पृथ्वी पर मसीह के सम्मान से जुड़ी हुयी थीं। इसलिए अपने मन में वह सब से जुड़ा हुआ था। एक कलीसिया (चर्च) की चिन्ता एक पास्टर को कुचल सकती है। पौलुस को सभी कलीसियाओं की चिन्ता थी।

वह मात्र कलीसियाओं के प्रति चिन्तित नहीं था, वह लोगों के प्रति चिन्तित था।

का झुण्ड या चर्च) का ख्याल (चिंता का बोझ) मेरे मन पर बना रहता है। 29किसकी कमज़ोरी से मैं कमज़ोर नहीं होता? किसके ठोकर खाने से मेरा मन नहीं दुखता?

30यदि मुझे गर्व करना ही है, मैं उन्हीं बातों के लिए करूँगा, जो मेरी कमज़ोरी को दिखाती हैं। 31प्रभु यीशु मसीह के पिता और परमेश्वर को जो सदा बड़ाई (स्तुति, प्रशंसा) के लायक हैं, यह पता है कि मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। 32मुझे पकड़ने के लिए दमिश्क में अरितास राजा के आधीन में नियुक्त गवर्नर ने शहर के दरवाज़ों पर चौकीदार तैनात किए थे। 33लेकिन मुझे रस्सी की बनी टोकरी में बैठाकर एक खिड़की से उतारा गया। इस तरह से मैं उसके हाथों से बच निकला।

12 हालांकि घमण्ड करना अच्छी बात नहीं है, लेकिन यह ज़रूरी है कि कुछ बातों में घमण्ड किया जाए। इसलिए मैं प्रभु द्वारा दिए गए दर्शनों और प्रकाशनों के बारे में बतलाऊँगा। 2मसीह में एक व्यक्ति को मैं जानता हूँ, जिसे चौदह साल पहले तीसरे स्वर्ग पर उठा लिया गया था। ऐसा देह सहित हुआ था या बिना देह, यह मुझे नहीं मालूम। परमेश्वर को इस बात की जानकारी है। 3और यह आदमी देह के साथ या देह के बगैर नहीं मालूम, यह तो परमेश्वर ही जानते हैं 4स्वर्ग पर उठा लिया गया और वहाँ ऐसी बातें सुनीं, जो बयान से बाहर तो है हीं, उन्हें बताना भी ठीक नहीं है। 5ऐसे व्यक्ति के बारे में तो मैं गर्व करूँगा, लेकिन जहाँ तक खुद

"चिंता"- जब लोगों ने विश्वासियों को ठोकर खिलायी तब पौलुस को बहुत पीड़ा हुयी। रोमि. 12:15 और गल. 6:2 में उसने अपने शब्दों को पूरा किया। जो कुछ उन्हों ने महसूस किया, उसका दुख उसे भी हुआ। यह सच है कि यह सब करने के लिए मसीह ने उसे सिखाया और योग्य किया।

11:29 सिर्फ़ चर्चों की वजह से ही वह दबाव महसूस नहीं करता था, लेकिन लोगों के व्यक्तिगत बर्ताव से भी।

"कमज़ोरी"- रोमि. 14:1; 15:1; 1 कुरि. 9:22.

11:30 "कमज़ोरी" - 12:5,9,10.

11:31कुरिन्थ में कुछ लोगों के लिए पौलुस की समस्याएँ विश्वास करने योग्य नहीं थीं। इसलिए वह गंभीरता से परमेश्वर के नाम में आश्वासन के साथ कहता है, कि ये सब बातें सच हैं।

11:32-33 प्रे.काम 9:22-25 यह एक उदाहरण हैं जहाँ वह अपनी कमज़ोरियों के लिए घमण्ड करता है। वह चाहता था कि वे समझें कि वह अपने बल पर घमण्ड नहीं करता है, किन्तु प्रभु पर जिसने उसे योग्य बनाया कि सब कुछ सह सके (3:5; 4:7)।

12:1 अपनी "कमज़ोरियों में" घमण्ड करने को, पौलुस कोई बड़ी बात नहीं समझता। किन्तु उसके पास और कोई चुनाव भी नहीं था - पद 11,19. ऐसा ही वह अपने दर्शनों और प्रकाशनों के बारे में सोचता है। किन्तु यदि कुरिन्थ में झूठे शिक्षक अपने दर्शनों और प्रकाशनों का घमण्ड कर रहे थे, तो वहाँ के मसीहियों के लिए। उत्पत्ति 15:1; गिनती 12:6.

12:2-5 क्या पौलुस अपने बारे में यहाँ कह रहा था? हाँ, देखें पद 7. वह सीधे अपने बारे में न कहकर किसी 'व्यक्ति' के बारे में क्यों कहता है? संभवतः क्योंकि उसकी कमज़ोरी से कुछ लेना देना नहीं, वह मात्र उसी में घमण्ड करना चाहता है। शायद इसलिए कि उसके साथ कुछ अजीब घटना घटी और वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा है, वह मात्र एक दर्शक के समान था।

12:4 "स्वर्ग"- यही तीसरा स्वर्ग है (पद 2)। कुछ यहूदी सिखाते थे कि सात स्वर्ग हैं। परमेश्वर के वचन बाईबल में ऐसा कुछ नहीं सिखाया गया है। "तीसरे स्वर्ग (आसमान)" - से पौलुस का अर्थ था सब से ऊँचा स्वर्ग, आत्मिक स्वर्ग, परमेश्वर का निवास स्थान, स्वर्गलोक। न्यूटेस्टामेन्ट में शब्द स्वर्गलोक तीन बार आया है यहाँ लूका 23:43 और प्रका. 2:7 में। पौलुस ने वहाँ ऐसी बातों को सुना, जिन्हें कहने की इजाज़त उसे नहीं थी। व्यव. 29:29; प्रका. 10:3-4 से तुलना करें।

का सवाल है, मैं अपनी कमज़ोरियों को छोड़ और किसी बात पर गर्व न करूँगा। 6यदि मैं गर्व करूँ भी तो मैं मूर्ख न ठहरूँगा, क्योंकि सच ही कहूँगा। फिर भी रूक जाता हूँ, ताकि ऐसा न हो कि जैसा कोई मुझे देखता है या मुझ से सुनता है, मुझे उससे बढ़कर समझे।

7परमेश्वर ने मुझे असाधारण प्रकाशन दिए। इसलिए उनकी वजह से मैं कहीं घमण्ड से न भर जाऊँ, मेरी देह (शरीर) में एक काँटा चुभाया गया। शैतान का एक दूत (संदेशवाहक) मुझे पीड़ित करता था, ताकि मैं अहंकार से भर न जाऊँ। 8मैं अलग-अलग तीन समयों में प्रभु के सामने गिड़गिड़ाया, "प्रभु इसे मुझ से दूर कर दीजिए।" 9लेकिन प्रभु यीशु बोले, "मेरा अनुग्रह तुम्हारे लिए काफ़ी है। इसलिए कि मेरी सामर्थ निर्बलता ही में ज़्यादा काम करती है।" इसलिए मैं बड़े आनन्द से अपनी कमजोरियों में गर्व करूँगा, ताकि मसीह की ताकत मुझ में बनी रहे। 10इसलिए मैं मसीह के लिए कमज़ोरियों,

---

12:6 जो कुछ वे देखते और सुनते थे, उसके आधार पर वे उसके बारे में और उसकी प्रेरिताई के बारे में वे अपना मत बनाएँ, वह यह चाहता था। उसके आत्मिक अनुभवों से नहीं जिनकी पुष्टि नहीं की जा सकती थी।

12:7 इस से मालूम होता है कि पद 2-5 में वह अपने बारे में कह रहा है। लोग घमण्ड और धोखे में पड़ गए, क्योंकि वे सोचते थे, कि पौलुस द्वारा देखे गए दर्शन और पाए हुए प्रकाशन से कहीं कम दर्शन और प्रकाशन उनके थे। पौलुस को जो कुछ प्रभु ने दिखाया, उसके सम्बन्ध में घमण्डी हो जाना उसके लिए स्वाभाविक था। परमेश्वर के पास किसी प्रेरित या किसी और व्यक्ति को घमण्ड से बचाने का तरीका था। पौलुस का 'काँटा' क्या था? हम उतना ही जानते हैं, जितना हमें बताया गया है। भाषा कठिन है। अलग-अलग मत ऐसे हैं।

1. कुछ का कहना है, कि 'शरीर' का अर्थ देह हो सकती है और 'काँटा' एक बीमारी या शारीरिक समस्या।

2. कुछ कहते है, कि 'शरीर' का अर्थ पापी स्वभाव हो सकता है, जिसके बारे में रोमि. 7:14-25 में लिखा है। इस यूनानी शब्द का अर्थ पतित स्वभाव भी हो सकता है रोमि. 7:5,18. यदि ऐसा हे तो यह एक ज़ोरदार प्रलोभन या बुरी सलाह थी जो उसके मन में आती थी, जिसने उसे घमण्ड करने से रोका।

3. गिनती की पुस्तक (गिनती 33:55) में काँटा शब्द उन मनुष्यों के लिए उपयोग किया गया है, जो इस्राएलियों को पीड़ा देने वाले थे।

यहाँ पर यूनानी शब्द 'संदेशवाहक' दूसरे स्थानों में स्वर्गदूत भी कहा गया है। यह शायद शैतान (दुष्टात्मा) द्वारा लाया गया था। जिसने उसका विरोध किया था उसकी कमज़ोरी के दायरे में उसके सामने परीक्षा खड़ी थी।

'काँटे' से उसे बहुत तकलीफ़ हुयी। शारीरिक, मानसिक या आत्मिक या तीनों, यह स्पष्ट नहीं है। पौलुस के अनुभव की तुलना अय्यूब 1:6—3:26 से करें।

12:8 कष्ट इतना अधिक था, कि उसने उसे हटाने की याचना की।

"तीन समयों"- मत्ती 26:44; यूहन्ना 13:38; 21:17; प्रे.काम 10:16 से तुलना करें। जैसा वह चाहता था, उस प्रकार से प्रार्थना का उत्तर नहीं मिला।

12:9 परमेश्वर ने उसे एक प्रतिज्ञा दी। साथ में यह भी बताया कि यदि वह मसीह में बलवान होना चाहता था, तो अपने आप में कमज़ोर होने के साथ, अपनी कमज़ोरी को जानना जरूरी था। प्रतिज्ञा यह थी कि वह उसे सहने के साथ आत्मिक लाभ उठाने में मदद करेंगे। परमेश्वर कभी भी कोई दर्द, खतरा, बोझ आदि हमारे रास्ते में बिना शक्ति दिए हुए नहीं आने देंगे। प्रत्येक युग में, हर स्थिति में उनकी मदद मिलेगी।

"इसलिए"- शारीरिक निर्बलता में प्रभु यीशु की शक्ति मददगार होती है, यह पौलुस ने सीख लिया। इसलिए कि उसकी इच्छा यह थी कि मसीह की शक्ति उस पर रहे (फ़िलि. 3:10)। प्रत्येक उस बात को वह सहने के लिए तैयार था, जो उसे कुछ सिखा सकती थी।

12:10 "मसीह के लिए"- शब्दों पर ध्यान दें - उसका पूरा जीवन और सेवा मसीह के लिए थे, उसके स्वयं के लिए नहीं। इसी कारणवश उसने सब कुछ सह लिया।

निन्दाओं, गरीबी, सताव और कठिनाईयों
में सन्तुष्ट हूँ, क्योंकि जब कभी मैं कमज़ोर
हूँ, तभी मैं बलवान होता हूँ।
11मैं मूर्ख तो बना, लेकिन तुम ही ने मुझे
ऐसा करने के लिए मजबूर किया। तुम्हें
तो मेरी बड़ाई करनी चाहिए थी। क्योंकि
हालांकि मैं कुछ भी नहीं हूँ फिर भी उन
बड़े से बड़े प्रेरितों में से किसी बात में कम
नहीं हूँ। 12सचमुच बड़े धीरज के साथ
एक प्रेरित के सबूत - चिन्ह, अद्‌भुत काम
और सामर्थी काम तुम्हारे बीच दिखाए
गए थे। 13किस बात में तुम दूसरे चर्चों
(कलीसियाओं) से कम समझे गए, केवल
इस बात में कि तुम पर मैं बोझ न हुआ?
मेरी इस गलती के लिए मुझे माफ़ करो।
14तीसरी बार मैं तुम्हारे यहाँ आने पर हूँ।
लेकिन मैं तुम पर बोझ न बनूँगा। इसलिए
कि मैं तुम्हारी दौलत नहीं पर तुम्हें चाहता
हूँ। बच्चों को अपने माता-पिता के लिए
बचत नहीं करनी पड़ती है, लेकिन माता-
पिता बच्चों के लिए बचत करते हैं। 15अब
मैं खुशी से तुम्हारे लिए खर्च करूँगा और
खर्च भी हो जाऊँगा जब कि मैं तुम लोगों
से अधिक प्रेम करता हूँ, क्या मेरे लिए
तुम्हारा प्रेम कम रहेगा? 16तुम में से कुछ
तो यह मानते हैं कि मैं तुम पर बोझ न बना,

"सन्तुष्ट हूँ"- बहुत से मसीही सोचते हैं कि कुढ़ कुढ़ के किसी न किसी तरह से निर्बलताओं, निन्दा, कठिनाइयों और सताव को सहना काफ़ी है। किन्तु जब एक व्यक्ति यह समझ जाता है कि इन सब बातों से आत्मिक लाभ है, तब वह उन में आनन्दित हो सकता है। परमेश्वर के मार्गों के इस प्रकाश में, पीड़ा आनन्द को उत्पन्न कर सकती है (मत्ती 5:11-12; प्रे.काम 5:40-41; 16:22-25; 1 पतर. 5:12-14 से तुलना करें)।

यहाँ पौलुस आत्मिक मनोबल की बात करता है, जो उसे मसीह का एक योग्य सेवक बनाती है। पौलुस अपनी कमज़ोरी में बलवान कैसे होता था। अपनी कमज़ोरी को महसूस करने के द्वारा उसने अपने ऊपर, अपनी सामर्थ, अपनी बुद्धि, अपनी योग्यता पर नहीं किन्तु मात्र परमेश्वर पर भरोसा रखा। 1:8-9; 1 कुरि. 2:1-5 देखें। परमेश्वर की सामर्थ प्राप्त करने, व्यक्ति को अपने ऊपर से भरोसा हटाकर उस पर भरोसा रखना है। यशा. 40:28-31 से तुलना करें। यह सामान्यतया मनुष्य के सोचने के विपरीत है।

12:11 "मूर्ख"- 11:1,16,21.

"तुम्हें तो मेरी बड़ाई करनी चाहिए थी"- 3:1-3; 1 कुरि. 9:1-3.

"मैं कुछ भी नहीं"- 3:5; 1 कुरि. 3:7; इफ़ि. 3:8.

12:12 आत्मिक सत्य सिखाने के लिए परमेश्वर ने मसीह और उसके प्रेरितों के द्वारा निशान दिए (यूहन्ना 2:11 में टिप्पणी देखें)।

"अद्‌भुत काम"- ऐसे कार्य जिनसे आश्चर्य होता है (मत्ती 12:22-23; 15:31; प्रे.काम 2:12; 3:10)।

"सामर्थी काम"- ऐसे कार्य जिन्हें अलौकिक शक्ति से किया जाता है। ये "एक प्रेरित के निशान" थे। उन से हम सीखते हैं कि प्रेरितों को चुना गया था, भेजा गया था और उन्हों ने परमेश्वर के सत्य को सिखाया (प्रे.काम 5:12; 14:3; इब्रा. 2:4)। एक व्यक्ति परमेश्वर द्वारा चुना गया और भेजा गया है इसकी पुष्टि आश्चर्यकर्मों से नहीं, लेकिन क्या उसका संदेश, विश्वास और जीवन वचन की शिक्षा के अनुरूप है या नहीं, इस से है। यदि ऐसा नहीं है तो हमें अद्‌भुत कामों को शक की दृष्टि से देखना चाहिए। ऐसे लोगों को धन सम्पत्ति के लोभ को त्याग कर, पौलुस के समान जीवन जीना चाहिए। हम तब उनकी ज़रूर सुनना चाहेंगे।

12:13 11:7-12; 1 कुरि. 9:12-18 माफ़ी माँग कर शायद पौलुस हास्यरूप में बात कर रहा है। वह जानता है कि उन से मदद लेकर उसने कुछ गलत नहीं किया है (7:2)।

12:14-15 उनका प्रेम और संगति उसके लिए, उनके किसी भी आर्थिक मदद से बढ़कर था। 6:11-13. वह चर्च के लिए पिता के समान था (1 कुरि. 4:15)। उसने बच्चों के प्रति पिता की ज़िम्मेदारी को समझा। वह उनके लिए सब कुछ (समय, शक्ति और योग्यता) खर्च करने के लिए तैयार था (7:3)। अपने सभी सेवकों में परमेश्वर यही देखना चाहते हैं। उन्हें ध्यान इस बात का रखना चाहिए कि परमेश्वर के लोगों को क्या दें, न कि उन से उनको क्या मिले।

12:16-18 ऐसा लगता है, कुछ लोग ऐसा कह रहे थे। यह सत्य है कि पौलुस ने चर्च से पैसा नहीं लिया था। उसका मुख्य उद्देश्य था कि यरूशलेम के मसीहियों के लिए चन्दा ले। (8:16-21; 1 कुरि. 16:1-4)।

फिर भी कुछ सोचते हैं कि चालाकी से मैंने तुम से फ़ायदा उठाया। 17जिन लोगों को मैंने तुम्हारे पास भेजा था, क्या उनके ज़रिए से मैंने तुम से कुछ लाभ उठाया? 18मैंने तीतुस को ज़बरदस्ती और साथ में दूसरे भाई को भेजा था। क्या तीतुस ने तुम्हें लाभ का निशाना बनाया था? क्या उसी की तरह हमारा व्यवहार नहीं था और हमारे कदम भी उसकी तरह नहीं थे?

19शायद तुम लोग यह समझ रहे होगे कि हम यह सब अपने बचाव के लिए कह रहे हैं। जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सब परमेश्वर को मौजूद जानकर मसीह में कह रहा हूँ। प्रिय भाइयो, जो हम करते हैं, वह सब तुम्हारी तरक्की के लिए है। 20मेरे भीतर, यह डर है कि कहीं ऐसा न हो, कि जैसा मैं चाहता हूँ, मेरे आने पर तुम्हें वैसा न पाऊँ। और तुम भी जैसी मुझ से आशा कर रहे हो, न पाओ। शायद तुम्हारे बीच झगड़ा-फ़साद, गुस्सा, विरोध, ईर्ष्या, चुगली, घमण्ड और बखेड़े हों। 21कहीं ऐसा न हो कि मेरे परमेश्वर फिर से तुम्हारे यहाँ आने पर मुझे दीन करें और मुझे बहुतों के लिए दुखी होना पड़े, जिन्होंने पिछले समयों में गुनाह (पाप) किया और गंदे काम, यौन-अनैतिकता और कामुकता को छोड़ा नहीं।

13 मैं तीसरी बार तुम्हारे यहाँ आने पर हूँ। दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात की पुष्टि की जाए। 2पिछली बार जब मैं आया था, तब भी यही कह रहा था। अब जब कि मैं तुम्हारे बीच हाज़िर नहीं हूँ, जिन्होंने पहले पाप किया था, उन से और दूसरे सभी लोगों से मैं यह कहना चाहता हूँ कि यदि मैं फिर आऊँगा तो उन्हें नहीं छोड़ूँगा। 3क्योंकि तुम तो इस बात का सबूत चाहते हो, कि यीशु मसीह मुझ में होकर बोलते हैं। तुम से निबटने के लिए वह कमज़ोर नहीं हैं, लेकिन सामर्थी हैं। 4जब वह क्रूस पर चढ़ाए गए थे, तब कमज़ोर दिख रहे थे, लेकिन परमेश्वर की

12:19 इस चिट्ठी में उसके घमण्ड और प्रेरिताई के बचाव पक्ष को रखने का कारण दिखता है। उनको गलतफ़हमी नहीं रखनी चाहिए।

वह उनके सामने अपना पक्ष इस प्रकार नहीं रख रहे थे जैसे कि न्यायियों के सामने खड़े हों (1 कुरि. 4:1-5)। जो कुछ उसे उन से कहना था, "घमण्ड" (1:12 भी), वह भी उनके लाभ के लिए था, उसके फ़ायदे के लिए नहीं। जो कुछ भी वह था (मसीह का प्रेरित) और उसके द्वारा सिखाए गए सत्य के द्वारा वे अपने आत्मिक जीवन में मजबूत किए जा सकते थे।

12:20-21 पौलुस यह बात जानता था कि वहाँ की कलीसिया कुछ मायने में कमज़ोर थी। दलबन्दी और यौन सम्बन्धी पापों में लिप्त थी (द्वारा 1 कुरि. 1:11-12; 3:3; 4:18; 5:2,11; 6:15-16; 8:1; 11:18,22)। उसे इस बात का डर था कि यदि वे उसे और उन्हें सिखाए गए सत्य को स्वीकार नहीं करेंगे, तो स्थिति बहुत बिगड़ जाएगी। उसके वहाँ भेंट देने पर उन्हें और उसे बड़ा दुःख भी होगा।

13:1 व्यव. 19:15 शायद पौलुस का अर्थ यह था कि जो कुछ वे थे, जो कुछ वह था, वह सब साफ़-साफ़ ज़ाहिर हो चुका था। दूसरे सबूतों को देने या देरी करने की आवश्यकता नहीं थी।

13:2 "तो...छोड़ूँगा"- 1 कुरि. 4:18-21; 5:3-5 उसका अर्थ यह है कि मसीह के प्रेरित की तरह वह अपने अधिकार का उपयोग करेगा ताकि अपराधी को दण्ड मिले।

13:3-4 "तुम तो इस बात का सबूत चाहते हो"- इस पत्र में उसकी प्रेरिताई के पक्ष में यहाँ लिखा है। यदि दीनता और नम्रता के बदले वे अधिकार और सामर्थ का प्रदर्शन चाहते थे, वह देने के लिए तैयार था 10:1. उसकी प्रतीत होने वाली निर्बलता को देखकर उन्हें चोट लगी (10:10; 1 कुरि. 2:3)। वे मसीह की सामर्थ को पा जाएँगे। मसीह भी उन्हें कमज़ोर दिखते थे (निर्बलता की अवस्था में क्रूस पर चढ़ाए गए ये)। परन्तु वह उनके बीच जी उठने की सामर्थ के साथ जीवित था। यदि वे अपनी गलती को मान कर छोड़ेंगे नहीं, पौलुस अपनी इसी सामर्थ को प्रगट करेगा।

शक्ति (सामर्थ्य) से ज़िन्दा हैं। इसलिए कि हम भी उन में कमज़ोर हैं, लेकिन हम परमेश्वर की शक्ति से उनके (यीशु के) साथ जियेंगे (जीवित रहेंगे), ताकि तुम्हारी सेवा करते रहें।

5अपने आप को जाँचो कि विश्वास में हो या नहीं, अपने आपको परखो। क्या तुम्हें यह नहीं पता कि यीशु मसीह तुम में हैं? नहीं तो तुम जाँच में असफ़ल साबित हुए हो। 6मेरी आशा यह है कि तुम यह जान लो कि हम असफ़ल नहीं रहे हैं। 7हमारी प्रार्थना यह है कि तुम कुछ गलत मत करो, इसलिए नहीं कि तुम सिद्ध दिखो, लेकिन इसलिए कि भलाई करो, चाहे असफ़ल ही दिखो। 8इसलिए कि हम सच्चाई के विरोध में कुछ नहीं कर सकते, लेकिन सच्चाई के पक्ष में ही कर सकते हैं। 9जब हम कमज़ोर ठहरते हैं, लेकिन तुम बलवन्त हो, तब हमें खुशी मिलती है। हमारी प्रार्थना यह होती है कि तुम पूरी तरह से योग्य बन जाओ। 10इसलिए अभी मैं तुम्हारी गैरहाज़िरी में लिख रहा हूँ, ताकि जब मैं आऊँ, मुझे अपना अधिकार इस्तेमाल करके तुम्हारे साथ कठोरता से बर्ताव न करना पड़े - परमेश्वर ने मुझे तुमको बनाने (परिपक्व करने) के लिए दिया है, न कि बर्बाद करने के लिए

13:5-6 "अपने आप को जाँचो"- वे पौलुस को परखना चाहते थे। वे इस बात का सबूत भी चाहते थे कि मसीह उसके द्वारा बात करते हैं (पद 3)। पौलुस कहता है कि यदि वे अपने आपको परखें, तो अच्छा होगा। यदि वे सफ़ल होते हैं, और इस बात का उन्हें निश्चय है कि मसीह उन में हैं, उन्हें यह जान लेना चाहिए कि उनका आत्मिक पिता - 1 कुरि. 4:15 भी जाँचे जाने के बाद सही निकला था।

यह परखा जाना क्या था? शिष्यों को यह क्यों और कैसे करना चाहिए? इसका उद्देश्य यह होता है कि हम यह देखें, कि विश्वास में है या नहीं - वह यह कि हम ने परमेश्वर की सच्चाई को कबूल करने के बाद विश्वास किया और उस पर चल रहे हैं या नहीं? कहीं हम नाम के शिष्य तो नहीं हैं? हम स्वयं को कैसे परखें? अपने मन में देखने के द्वारा कि वहाँ क्या है (यदि हम ऐसा करें तो रोमि. 7:18,21 की तरह कुछ पाएँगे) मात्र अपनी भावनाओं को परखने के द्वारा नहीं। (हमारी भावनाएँ ऊपर नीचे होती रहती हैं और हमारे आत्मिक जीवन की सही हालत नहीं बता सकती)। हमें अपने कार्यों को परखने और वचन के प्रति आज्ञाकारिता या अनाज्ञाकारिता के आधार पर अपनी जाँच करनी चाहिए।

हम जानते हैं कि फल से पेड़ पहचाना जाता है (मत्ती 7:16-20; इब्रा. 6:9-10)। यदि मसीह के साथ हमारा अनुभव नहीं है और हम उनके प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं। यदि हमारा जीवन और सोच विचार बाईबल के विपरीत है, तो हम कैसे कह सकते हैं कि हम मसीह के हैं? किन्तु यदि हम जानते हैं कि मसीह के साथ हमें कुछ अनुभव है और उनकी बातों को मानना चाहते हैं (हालांकि हमारे प्रयास नाकामयाब हो सकते हैं)। यह भी कि गुनाहों की माफ़ी पाने के लिए हमें जो करना है, हम ने किया है, तो हम कह सकते हैं कि मसीह हमारे भीतर हैं। 1 यूहन्ना 5:9-13; 2:4; 3:10,14,24. यह जानने के लिए कि हम विश्वास में हैं कि नहीं, हमें वह सब करना चाहिए जो करने की ज़रूरत है - इब्रा. 6:11; 2 पतर. 1:10. यदि हम पास नहीं होते है, हमें मायूस नहीं होना चाहिए। हमें पूरे मन बदलाव की ज़रूरत है।

"यीशु...है"- यूहन्ना 17:23; रोमि. 8:9-10; कुल. 1:27; प्रका. 3:10.

13:7-9 वह पुनः अपने विचारों में उन्हें रखता है - उसकी इच्छा यह है कि वे परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध रखें। चाहे, उन्हें स्वयं इस पर सन्देह हो। यदि वे परमेश्वर के प्रति सच्चे हों, तो इसके लिए वह कुचले जाने तक के लिए तैयार था। वह हर बात में सत्य के लिए जीवित रहना चाहता था (1 कुरि. 9:23; 2 तीमु. 2:10)।

13:9 4:12; 1 कुरि. 4:9-13 देखें।

"योग्य बन जाओ" - 7:1; मत्ती 5:48 के नोट्स देखें। हमारे खुद और दूसरों के लिए 'पूरी आत्मिक समझदारी' लक्ष्य होना चाहिए "प्रेम और शान्ति का परमेश्वर"।

13:10 पद 2; 1 कुरि. 4:21.

11 आखिर में भाइयो-बहनो खुश रहो,
सिद्ध हो जाओ, हिम्मत रखो, मेल से रहो,
और प्रेम एंव शान्ति के परमेश्वर तुम्हारे
संग होंगे।
12 गले लगाते (पवित्र चुंबन से) एक
दूसरे से मिलो।
13 सभी पवित्र लोग तुम्हें सलाम कहते हैं।
14 प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर
का प्रेम और पवित्रात्मा की संगति तुम
सभी के साथ रहे।

13:11 "सिद्ध हो जाओ"- पद 9; 7:1 देखे मत्ती 5:48 अपने प्रति तथा दूसरों के प्रति हमारा उद्देश्य आत्मिक परिपक्वता ही होना चाहिए।

"प्रेम...परमेश्वर"- इब्रा. 13:20; 1 यूहन्ना 4:8.

13:12 "चुंबन"- रोमि. 16:16.

13:14 यहाँ पर यह पद सच्चाई से भरा है। यीशु इस पद में हैं। वह प्रभु और मसीह दोनों हैं (प्रे. काम 2:36. 'प्रभु' के सम्बन्ध में लूका 2:11; फ़िलि. 2:10-11; "मसीह" के सम्बन्ध में मत्ती 1:1)। में नोट्स देखें। दया के द्वारा गुनहगार बचते हैं, विश्वासी आशीष पाते हैं (8:9; यूहन्ना 1:14-17; गल. 1:6) मसीह दया का स्त्रोत हैं, कहने का अर्थ है, यीशु परमेश्वर हैं। फ़िलि. 2:6 में पद देखें।

इस पद में परमेश्वर पिता के विषय में भी है। परमेश्वर ने मसीह यीशु को भेजा (यूहन्ना 3:16; रोमि. 5:8; 1 यूहन्ना 4:10) परमेश्वर के प्रेम के बारे में पद 11 में है। यह परमेश्वर का प्रेम दिखाता है। परमेश्वर के प्रेम के कारण मसीह ने आकर दया दिखायी। उनकी दया के कारण परमेश्वर का प्रेम, विश्वासियों के साथ रह सकता है। यहाँ पवित्र आत्मा भी हैं। यूहन्ना 14:16-17 के नोट्स देखें। उसका व्यक्तित्व यहाँ है। हम सहभागिता व्यक्ति के साथ रख सकते हैं, अचेतन प्रभाव या सामर्थ से नहीं। पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर विश्वासी में रहते हैं। उन्हीं के द्वारा हमारी संगति पिता परमेश्वर और मसीह यीशु के साथ है (1 यूहन्ना 1:3)।

इस पद में त्रिएकत्व है। मुक्ति के कार्य में पवित्र किए जाने और विश्वासियों की आशीष में प्रत्येक की अपनी जगह है। मत्ती 3:16-17 में त्रिएकत्व पर टिप्पणी देखें।